॥ ॐ ह्रीं नमः ॥

॥ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ललितायै नमः ॥

श्रीयंत्र अनुसंधान केंद्र

सम्पूर्ण श्रीयंत्र विवेचनम् एवं महात्म्य परिचय

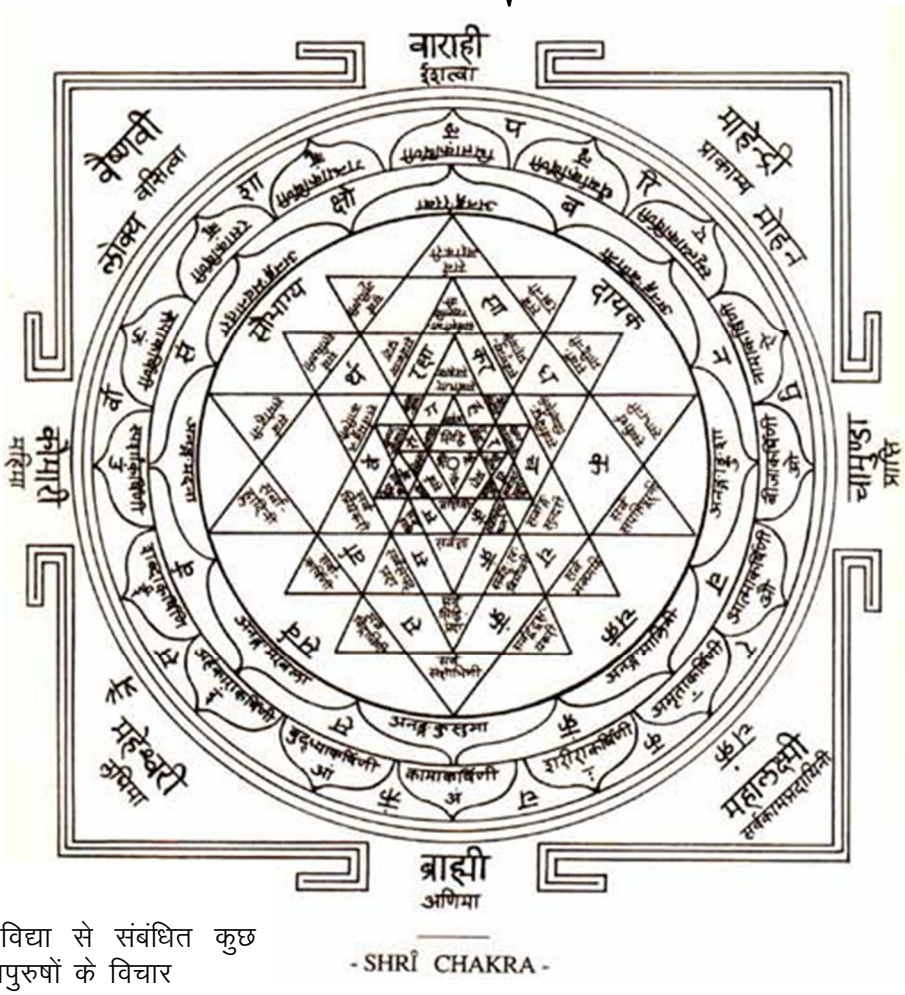

- SHRÎ CHAKRA -

विशेष आकर्षण

श्री यंत्र एवं श्री विद्या से संबंधित कुछ प्रमुख तथ्य एवं महापुरुषों के विचार

श्री ललिता पंचकम्

श्री यंत्र पर अरविंद जी के विचार

श्री यंत्र पर कुछ विशिष्ट एवं दुर्लभ प्रयोग

प्रेम विवाह और ज्योतिष

सौजन्य से :– **श्री अभिषेक कुमार**

(श्री विद्या के उपासक एवं महाविद्याओं के सिद्ध साधक)

वन्दे गुरुर्मण्डलम्

।। नमः निखिलेश्वर्यायै ।।

—: श्री निखिल पंचकम् :—

ॐ नमः निखलेश्वर्यायै कल्याण्यै ते नमो नमः। नमस्ते रुद्र रूपिण्यै ब्रह्ममूर्त्यै नमो नमः।। 1।।

नमस्ते क्लेश हारिण्यै मंगलायै नमो नमः। हरति सर्व व्याधिनां श्रेष्ठ ऋष्यै नमो नमः।। 2।।

शिष्यत्व विष नाशिन्यै पूर्णतायै नमोस्तुते। त्रिविध ताप संहर्त्यै ज्ञान दात्र्यै नमो नमः।। 3।।

शांति सौभाग्य कारिण्यै शुद्ध मूर्त्यै नमोस्तुते। क्षमावत्यै सुधावर्त्यै तेज वर्त्यै नमो नमः।। 4।।

नमस्ते मंत्र रूपिण्यै तंत्र रूप्यै नमोस्तुते। ज्योतिषं ज्ञान वैराग्यं पूर्ण दिव्य नमो नमः।। 5।।

—: माहात्म्य :—

य इदं पठतिं स्तोत्रं श्रृणुयाद् श्रद्धयान्वितं। सर्व पाप विमुच्यन्ते सिद्धयोगि च संभवे।। 1।।

रोगस्थो रोग तं मुच्येत् विपदा त्राणया दपि। सर्व सिद्धि भवेदस्य दिव्य देह च संभवे।। 2।।

निखिलेश्वर्य पंचकं य नित्यं यो पठते नरः। सर्वान् कामानमवाप्नोति सिद्धाश्रमो च वाप्नुयात्।। 3।।

।। ॐ ह्रीं नमः ।।

॥ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ललितायै नमः ॥

-:: क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ::-

श्री यंत्र एवं श्री विद्या से संबंधित कुछ प्रमुख तथ्य एवं महापुरूषों के विचार

1. **जिस घर में श्रीयंत्र नहीं है, वह घर श्मशान के समान है – आदि शंकराचार्य**
2. श्री यंत्र में 2816 शक्तियों एवं देवियों का वास है और श्रीयंत्र की पूजा इन सारी शक्तियों की समग्र पूजा है – परमपूज्य गुरूदेव स्वामी निखिलेश्वरानंद जी महाराज
3. मैंने जितना ही ज्यादा श्रीयंत्र को समझने का प्रयास किया है, उतना ही रहस्य लपेटे हुए पाया है – पाश्चात्य विद्वान वुडरोफ
4. अन्य किसी भी प्रयोग या साधना से लक्ष्मी प्रसन्न हों या न हो, परंतु श्रीयंत्र की स्थापना करने मात्र से निश्चय ही लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं, और साधक को पूर्ण भौतिक सुख, सफलता और संपन्नता प्रदान करती है। जहां यह यंत्र स्थापित होता है, वहां पर दरिद्रता का पूर्ण विनाश होता है, ऋण समाप्ति में यह यंत्र पूर्ण सफलतादायक है – प्राचीन भारत वर्ष के सभी ऋषि-मुनिगण
5. यह यंत्र स्वयं ही पूर्ण होता है, यदि धातु निर्मित मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो। यह यंत्र अपने आप में रहस्यमय, विशिष्ट सिद्धिप्रद एवं प्रभावपूर्ण है – महर्षि भारद्वाज
6. श्रीयंत्र यदि मंत्र सिद्ध है तो इस पर अन्य किसी भी प्रकार का प्रयोग या उपाय करने की आवश्यक्ता नहीं है, क्योंकि यह स्वयं ही चैतन्य हो जाता है और जहां पर भी यह स्थापित होता है, उसी को अनुकूल फल और प्रभाव देने लग जाता है – महर्षि कणाद
7. लक्ष्मी तू चाह कर भी अब वैकुंठ में छुप नहीं सकती, तुझे आना ही पड़ेगा, क्योंकि मैंने श्रीयंत्र स्थापित कर लिया है – महर्षि वशिष्ठ
8. मेरी इच्छा तो नहीं है, जाने की लेकिन मुझे अब वशिष्ठ के यहां अपने संपूर्ण स्वरूपों से स्थापित होना ही पड़ेगा, क्योंकि उसने श्रीयंत्र स्थापित कर लिया है, जिसके प्रभाव से मेरा परम आकर्षण हो रहा है – क्षीर सागर में भगवान विष्णु से माता लक्ष्मी
9. वास्तव में ही वे नर धन्य हैं, जो अपने जीवन में त्रिपुर सुंदरी साधना की पूर्ण विधि ज्ञात कर, इस साधना में भाग लेते हैं, और सफलता प्राप्त करते हैं – महर्षि वशिष्ठ
10. ऐसे मनुष्य अभागे ही कहे जा सकते हैं, जो छोटी साधनायें तो कर लेते हैं, परंतु त्रिपुरसुन्दरी साधना में भाग नहीं लेते और फिर बिना सौभाग्य के ऐसी अद्वितीय साधना प्राप्त हो ही नहीं सकती – महर्षि विश्वामित्र
11. वे साधक धन्य हैं, जो अपने जीवन में त्रिपुर सुन्दरी साधना संपन्न कर धन, यश, मान, पद-प्रतिष्ठा अर्जित कर लेते हैं – योगीराज विज्ञानानंद
12. मेरा जीवन अधूरा और अपूर्ण ही रह जाता, यदि मैं अपने जीवन में तांत्रोक्त रूप से त्रिपुर सुन्दरी साधना संपन्न नहीं कर लेता – गुरू गोरखनाथ

13. मेरे पूरे जीवन का, और साधनात्मक जीवन का निचोड़ यह है, कि संसार की समस्त साधनाओं में मनोवांछा त्रिपुर सुन्दरी साधना अपने आप में पूर्ण है, अलौकिक है, अद्वितीय है, और आश्चर्यजनक रूप से सिद्धि प्रदान करने वाली है – आदि शंकराचार्य

14. श्रीविद्या पर लिखना अत्यंत कठिन कार्य है। मजाक नहीं है श्रीयंत्र का स्थापत्य एवं श्री ललिताम्बा सर्पया पूजन। क्षण भर में लेने के देने पड़ जा सकते हैं – परमपूज्य गुरूदेव श्री अरविंद सिंह जी महाराज

15. मैं गुरूदेव बलराम जी से दीक्षा लेकर अनेक वर्षों से शत्रु संहार के कार्यों में रत था, परंतु असफल था। अंत में श्रीयंत्र की स्थापना के बाद ही इस कार्य में मुझे पूर्ण सफलता मिली एवं मैं पूर्ण सिद्धि को प्राप्त हुआ – श्री अभिषेक कुमार

16. यह श्रीविद्या सारे संसार में, तीनों लोकों में अति दुर्लभ है। इसे कभी भी अभक्त एवं पराये शिष्यों को नहीं देनी चाहिए। जान देकर भी अगर यह प्राप्त हो तो ले लेनी चाहिए, इसमें घाटे का सौदा नहीं है – परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी

17. संपूर्ण राक्षस जाति को अगर धन–ऐश्वर्य से संपन्न बनाना है, तो श्रीविद्या की साधना एवं पारद या स्फटिक के श्रीयंत्र की स्थापना करनी ही होगी – राक्षसराज रावण

18. स्वर्ग में अगर लक्ष्मी को स्थायी रूप से स्थापित करना है, तो श्रीयंत्र की स्थापना करनी ही होगी – देवगुरू बृहस्पति एवं देवराज इन्द्र

19. अगर संपूर्ण दैत्य साम्राज्य का उत्थान चाहते हो, और अगर चाहते हो कि लक्ष्मी संपूर्ण ऐश्वर्यों के साथ दैत्यों के यहाँ निवास करे तो श्रीयंत्र की स्थापना करनी ही होगी – दैत्यगुरू शुक्राचार्य

20. रूद्र तत्व ज्यादा देर तक सहन नहीं कर सकता, शिवत्व को तो सौन्दर्य चाहिए ही। शिवत्व को शांत कर सकती हैं, भगवती महात्रिपुर सुन्दरी – परमपूज्य गुरूदेव श्री अरविंद सिंह जी

21. अब एक बात ध्यान से सुनिए, जो श्रीयंत्र की स्थापना करता है, उसके सूक्ष्मातीत रहस्य को समझता है, श्रीचक्र एवं श्रीयंत्र के आवरण में बैठी एक–एक शक्तियों की उपासना संपन्न करता है, और भगवती महात्रिपुर सुन्दरी की कृपा प्राप्त करता है, उसका पुनर्जन्म नहीं होता। जो गुरू श्रीयंत्र के अंतर्गत स्थान प्राप्त कर लेता है, वह जन्म और मृत्यु के बंधन से मुक्त हो जाता है, क्योंकि भगवती महात्रिपुर सुन्दरी कर्म के सिद्धांत का मजाक उड़ाती है, भाग्य रेखा को अपनी दृष्टि से परिवर्तित कर देती हैं, ग्रह–नक्षत्रों की वाणी अर्थात् जन्मकुण्डली को शून्य कर देती हैं। अतः श्री विद्या की उपासना जीव को अपने अंतिम जीवन में ही प्राप्त होती है। सब कुछ परिवर्तित कर देने की शक्ति, स्वयं भगवान बन जाने की शक्ति, स्वयं शिव बन जाने की घोषणा, सब कुछ मिटा देना, जैसा चाहना वैसा करना, जो जी में आए वो करना। समस्त सिद्धियों का चरणों में लौटना, समस्त अवतारों एवं देवी–देवताओं का हाथ जोड़कर सामने नतमस्तक होनी की शक्ति प्रदान करती है, भगवती महात्रिपुर सुन्दरी – परमपूज्य गुरूदेव श्री अरविंद सिंह जी

22. अब यह जन्म मेरा आखिरी है। अब जन्म–मरण के चक्कर में नहीं पड़ना पड़ेगा। गर्भ की कैद से सदा–सदा के लिए मुक्ति है, क्योंकि इस जन्म में मुझे श्रीविद्या की प्राप्ति हुई है और श्रीयंत्र की स्थापना करवाने जा रहा हूँ – श्री अभिषेक कुमार

23. अगर माँ भगवती महात्रिपुर सुन्दरी न हों, तो शिव को कोई नहीं पूजे। भस्म लगाए, श्मशान में बैठे, बूढ़े बैल की सवारी एवं नाना प्रकार के विचित्र जीवों से घिरे शिव का वास्तविक सौन्दर्य हैं, भगवती माँ महात्रिपुर सुन्दरी – आदि शंकराचार्य

24. भगवती त्रिपुरसुन्दरी ही शिव जैसे रूखे पत्थर में भी स्पंदन करा रही हैं। बिल्कुल ठीक कहा, माँ भगवती महात्रिपुर सुन्दरी न हों तो पता नहीं सृष्टि का क्या हाल हो जाए। आदि शंकराचार्य ने अपने शक्तिपीठों में कहीं भी शिवलिंग स्थापित नहीं किया, बल्कि केवल श्रीयंत्र स्थापित किए। उन्हीं में ताकत थी, सत्य देखने की। उन्हें ही भगवती महात्रिपुर सुन्दरी ने पूजन का अधिकार दिया। जिसने माँ भगवती महात्रिपुर सुन्दरी को पूज लिया, फिर उसे किसी पूजन की आवश्यकता नहीं है, उसे कहीं और उलझने की आवश्यक्ता नहीं है। परंतु मुख्य बात यह है कि क्या माँ भगवती महात्रिपुर सुन्दरी पूजन करने का अधिकार देती हैं? क्या वे स्वीकार करने को तैयार हैं? बस यहीं पर गाड़ी अटकती है। – परमपूज्य गुरूदेव श्री अरविंद सिंह जी

25. मेरी संपत्ति स्थायी होती ही नहीं, अगर शिव द्वारा मैंने श्रीविद्या साधना प्राप्त कर श्रीयंत्र की स्थापना न की होती – यक्षराज कुबेर

26. ललिताम्बा साधना अत्यंत गोपनीय है। इस साधना को भूल कर भी अपने पुत्र या शिष्य को भी नहीं बताना चाहिए – गोरख संहिता

27. ललिताम्बा साधना सिद्ध करने के बाद साधक पूरे संसार में विजयी होता है और ललिताम्बा यंत्र को धारण करने के बाद वह जिस व्यक्ति से भी मिलता है, उसको प्रभावित करता है और उस पर विजय प्राप्त करता है – शंकर भाष्य

28. सौभाग्यशाली साधक ही ललिताम्बा यंत्र को प्राप्त कर सकते हैं, इसे सिद्ध करने पर उसके शत्रु स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं और जीवन में उसे किसी भी प्रकार का कोई भय नहीं रहता – तंत्रसार

29. यह एक प्रकार की कायाकल्प साधना भी है। इसके मंत्र जप से नपुंसक व्यक्ति भी पूर्ण यौवनमय एवं कामदेव के समान सौन्दर्यवान बन जाता है। यह साधना बुढ़ापे को समाप्त कर पुनः यौवन प्रदान करने में समर्थ है – रसतंत्र

30. एक तो ललिताम्बा यंत्र और उससे संबंधित मंत्र गोपनीय और सर्वथा दुर्लभ है। पर यदि किसी को यह प्राप्त हो जाए, तो उसे शून्य सिद्धि स्वतः प्राप्त हो जाती है और साधना सिद्ध होने पर वह वायु में से कोई भी पदार्थ प्राप्त करने में सफल हो जाता है और ऐसा व्यक्ति सिद्ध योगी कहलाता है – मंत्र विज्ञान

31. गुरू अपनी तेजस्विता से ललिताम्बा यंत्र को सिद्ध कर शिष्य को प्रदान करें और जब शिष्य ऐसा यंत्र धारण कर साधना संपन्न करता है, तो उसका तृतीय नेत्र स्वतः ही स्पन्दित हो जाता है –विश्वामित्र संहिता

32. हजार काम छोड़ कर भी साधक को यह साधना संपन्न कर लेनी चाहिए, क्योंकि अन्य साधनायें तो फिर भी प्राप्त हो सकती हैं, पर यह साधना तो कई–कई जन्मों के पुण्यों से ही प्राप्त हो सकती है – व्यास समुच्चय ग्रंथ

33. निष्फल है, उन सभी साधकों विशेषकर शाक्त साधकों का जीवन, जिन्होंने अपने जीवन में श्रीविद्या की दीक्षा नहीं ली है और श्रीयंत्र की स्थापना नहीं की है – महान वामाचारी तंत्र साधक श्रीवामाखेपा जी महाराज

34. अगर भारतवर्ष से सभी विद्यायें लुप्त हो जायें और अगर एक मात्र श्रीयंत्र रह जाए तो भी भारत पुनः विश्वगुरू बनने की क्षमता रखता है – स्वामी विवेकानंद

35. शक्ति कितनी भी प्रचण्ड क्यों न हो जाए, खून की प्यासी क्यों न हो जाए, अगर उसके सामने स्फटिक का श्रीयंत्र रख दिया जाए तो उसे वरदान देना ही पड़ेगा, भक्तों को अभय प्रदान करना ही पड़ेगा – श्री अभिषेक कुमार

36. मूर्ख हैं, वे लोग जो वर्षों से दुर्गा की मूर्ति तो स्थापना कर रहे हैं, किंतु श्रीयंत्र को महत्व नहीं दे रहे हैं। इस दुर्गा तंत्र का चरम बिंदु है – श्री यंत्र। शाक्त साधना में तीन क्रम हैं – दुर्गा तंत्र, कामाख्या तंत्र एवं श्रीविद्या तंत्र – श्री अभिषेक कुमार

37. कैसे भी निठल्ले व्यक्ति को यदि श्रीयंत्र का लॉकेट पहना दिया जाए, तो उसे भी सद्बुद्धि आ जाती है, और काम–काज करने लगता है। श्रीयंत्र में एक साथ सैंकड़ों शक्तियों का निवास है। एक भी व्यक्ति मुझे ऐसा नहीं मिला, जिसने प्राण प्रतिष्ठित श्रीयंत्र के सामने श्रीसुक्त का पाठ किया हो, और उसे कुछ नहीं मिला हो – श्री राधाकृष्ण श्रीमाली

38. अगर संपूर्ण सिख समाज को श्री संपन्न बनाना है, तो प्रत्येक गुरूद्वारे में श्रीयंत्र की स्थापना करो – गुरू गोविंद सिंह जी महाराज

39. जैन समुदाय को अगर बिना कृषि किए हुए भी लक्ष्मी संपन्न बनाना है, तो श्रीयंत्र की स्थापना कर देवी पद्मावती का पूजन करना ही होगा – 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ एवं 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर

40. अगर शास्ता के इस धर्म की पूरे विश्व में प्रचार–प्रसार चाहते हो, देवताओं द्वारा प्रशंसित इस धर्म के पूर्ण उत्थान के लिए प्रत्येक बौद्ध मठों एवं मंदिरों में श्रीयंत्र की स्थापना अवश्य करो – भगवान बुद्ध

41. बहुत हो चुका भिक्षाटन दो हाथों वालों के सामने। अब तो उसके आगे हाथ फैलाऊंगा, जिसके सामने शिव भी अपना भिक्षा पात्र फैलाते हैं, अर्थात् भगवती महात्रिपुर सुन्दरी से ही मांगूगा – दतिया पीठ के संस्थापक श्री श्री वनखण्डेश्वर जी महाराज

42. भगवती महात्रिपुर सुन्दरी की प्रतिष्ठा हेतु ही अन्य महाविद्यायें श्रीचक्र के अंतर्गत क्रियाशील की जाती हैं, क्योंकि अंत में महात्रिपुर सुंदरी आती हैं। जब सब निष्फल हो जाते हैं, शिव भी निष्फल हो जाते हैं, भैरव और गणेश भी निष्फल हो जाते हैं, वीरभद्र, मणिभद्र, महाकाली भी बाधित हो जाते हैं, तो अंत में माँ भगवती महात्रिपुर सुंदरी अपना धनुष उठाती हैं और एक क्षण में सब कुछ परिवर्तित करके रख देती हैं। मूल प्रकृति ही परिवर्तित करके रख देती हैं, अर्थात् मिर्ची को मीठा बना देना, विष को भी अमृत बना देना – परमपूज्य गुरूदेव श्री अरविंद सिंह जी

43. वास्तविक आध्यात्मिक यात्रा शुरू होती है, महाविद्या साधना से। यहाँ पर वह संतानोत्पत्ति से मुक्त होता है, स्त्री आकर्षण से मुक्त होता है। वह तंत्र क्षेत्र में पदार्पण करता है एवं एक–एक कर इन महाविद्याओं को हस्तगत करता है। कुछ जीवन वह शिव–शिव चिल्लाता है, शिव में उसकी अभिरूचि अत्यंत बढ़ जाती है। वह शिव गणों का पद भी प्राप्त करने में सक्षम होता है। बस यहीं पर वास्तविक खेल होता है एवं शिव से उसका मोह टूटता है, और वह भगवती महात्रिपुर सुन्दरी को पहचान लेता है। उसका कोई लक्ष्य नहीं बचता, न शिव, न अवतार, न गुरू, न कोई ग्रंथ इत्यादि। तब उसमें चित्त शक्ति का विकास होता है, और वह कामकला अर्थात् बिन्दु नाद के मर्म को समझ पाता है, और वह दुर्वासा, आदि शंकर, व्यास, परशुराम, दत्तात्रेय इत्यादि की श्रेणि में आ जाता है। यह है श्री–श्रीचक्र रहस्यम् – परमपूज्य गुरूदेव श्री अरविंद सिंह जी

44. अगर आध्यात्मिक व्यक्तियों की बात की जाए तो जिसने अपने आध्यात्मिक यात्रा में एक भी महाविद्या की साधना संपन्न नहीं की, उसे मैं आध्यात्मिक व्यक्ति मानता ही नहीं। उनसे बराबर में बात करना भी मुझे हेय लगता है। उनकी समस्त तथाकथित सिद्धियाँ, भीड़ एवं प्रपंच मुझे तुच्छ लगता है। व्यर्थ है उन धार्मिक व्यक्तियों का जीवन जिन्होंने अब तक महाविद्यायें साधना संपन्न नहीं की। और बेकार है उनका गुरू जिन्होंने अब तक उनको पारद शिवलिंग अथवा स्फटिक के श्रीयंत्र की स्थापना संपन्न नहीं करवायी अथवा श्रीविद्या दीक्षा संपन्न नहीं की, क्योंकि यही महाविद्या उनके जन्म–मरण के चक्र को काटने वाली है। उनकी समस्त सिद्धियों से बहुत ऊपर हैं ये महाविद्यायें – श्री अभिषेक कुमार

45. अगर भगवती त्रिपुर सुन्दरी की विद्या मुझे नहीं मिलती और इन्होंने अपने चरण कमलों का दर्शन करा कर मुझे संभाला नहीं होता तो आज मैं भी संसार के भवसागर में भटकता हुआ सामान्य प्राणी रहता और परायी स्त्रियों के चक्कर में उलझा रहता – श्री अभिषेक कुमार

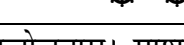

बालार्क मण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्। पाशाङ्कुश धनुर्बाणान् धारयन्तीं शिवां भजे।।

श्री ललिता पंचकम् : ललिता प्रातः स्मरण स्तोत्र

(हिन्दी अनुवाद)

मैं प्रातः काल श्री ललितादेवी के उस मनोहर मुख कमल का स्मरण करता हूँ, जिसके बिम्बसमान रक्तवर्ण अधर, विशाल मौक्तिक से सुशोभित नासिका और कर्णपर्यन्त फैले हुए विस्तीर्ण नयन हैं, जो मणिमय कुण्डल और मंद मुस्कार से युक्त हैं तथा जिनका ललाट कस्तूरीतिलक से सुशोभित हैं।

मैं श्री ललिता देवी की भुजारूपिणी कल्पलता का प्रातःकाल स्मरण करता हूँ, जो लाल अंगूठी से सुशोभित सुकोमल अंगुली रूप पल्लवों वाली तथा रत्नखचित सुवर्णकंकण और अंगदादि से भूषित हैं एवं जिसने पुण्ड्र-ईख के धनुष, पुष्पमय बाण और अंकुश धारण किया है।

मैं श्री ललिता देवी के चरणकमल को, जो भक्तों को अभीष्ट फल देने वाले और संसार सागर के लिए सुदृढ़ जहाज रूप हैं तथा कमलासन श्री ब्रह्मा जी आदि देवेश्वरों से पूजित और पद्म, अंकुश, ध्वज एवं सुदर्शनादि मंगलमय चिन्हों से युक्त हैं, प्रातःकाल नमस्कार करता हूँ।

मैं प्रातःकाल परमकल्याण रूपिणी श्री ललिता भवानी की स्तुति करता हूँ, जिनका वैभव वेदान्तवेद्य है, जो करुणामयी होने से शुद्धस्वरूपा हैं, विश्व की उत्पत्ति, स्थिति और लय की मुख्य हेतु हैं, विद्या की अधिष्ठात्री देवी हैं तथा वेद, वाणी और मन की गति से अति दूर हैं।

हे ललिते! मैं तेरे पुण्यनाम कामेश्वरी, कमला, महेश्वरी, शाम्भवी, जगज्जननी, परा, वाग्देवी तथा त्रिपुरेश्वरी नामों आदि का प्रातःकाल अपनी वाणी द्वारा उच्चारण करता हूँ।

माता ललिता के अति सौभाग्यप्रद और सुललित इन पाँच श्लोकों को जो पुरुष प्रातः काल पढ़ता है, उसे शीघ्र ही प्रसन्न होकर श्री ललिता देवी विद्या, धन, निर्मल सुख और अनंत कीर्ति देती हैं।

श्री यंत्र के बारे में परम पूज्य गुरुदेव श्री अरविंद सिंह जी महाराज के कुछ अनमोल विशिष्ट वचन

1. श्रीयंत्र ब्रह्माण्ड की संरचना है एवं ब्रह्माण्ड का एकमात्र कार्य शक्ति उपासना है।
2. मातृ शक्ति एक रूप में व्यवस्थित नहीं की जा सकती। यही शक्ति की विशेषता है। साधक जिस रूप में शक्ति की उपासना करता है, वह अपनी क्षमतानुसार शक्ति के उस रूप को प्राप्त करता है। परंतु शक्ति के अगर सभी रूप एकाग्रचित्त अर्थात् एक में समाहित कर दिये जायें और सबके सब अगर श्री उत्पादन में तल्लीन हों, तो श्रीयंत्र की उत्पत्ति होती है। सृष्टि, स्थिति और संहार का अनूठा गठबंधन है : श्री यंत्र।
3. श्रीयंत्र के अंतर्गत मातृ शक्ति के जितने भी रूप हैं, सब के सब एक साथ पुष्प गुच्छ के रूप में समाहित हैं और षोडशी रूपी मातृ शक्ति इन सबके बीच क्रियाशील है। अतः इसकी उपासना शांति एवं विभिन्नता प्रदान करती है। जीवन में प्रचुरता श्री यंत्र के माध्यम से ही आती है।
4. मनुष्य को मालूम है कि मृत्यु निश्चित है, परंतु मनुष्य श्री उपासना के द्वारा मृत्यु को ढकेलता है, जीवन को सर्वोपयोगी बनाता है एवं मृत्यु के पश्चात् भी अमरांश की प्राप्ति करता है।
5. आदि काल से ही भारत की धर्मभूमि पर मंदिरों, देवालयों, आश्रमों एवं गृहस्थों के पूजा घरों में श्रीयंत्र की स्थापना एवं उपासना का विधान है। श्रीयंत्र विशुद्ध ब्रह्माण्डीय ऊर्जा को ग्रहण एवं विस्तारित करता रहता है एवं इसके सान्निध्य में निवास करने वाले व्यक्तियों को यह अद्भुत शांति, सुख और विपुलता प्रदान करता है। जिस भी स्थान पर श्री यंत्र का विधि–विधान से प्रतिदिन पूजन होता है, वहाँ का आभामंडल स्वयमेव अलौकिक एवं आनंदमयी हो जाता है।
6. इस संपूर्ण ब्रह्माण्ड में जो भी आकार, आकृति या रहस्य है, वह श्रीयंत्र में है। अर्थात् इस ब्रह्माण्ड का प्रसवक्रम श्रीयंत्र में निहित है।
7. जो भी देव शक्तियाँ श्रीयंत्र में हैं वे सबकी सब पूर्ण संतुष्ट अवस्था में हैं। इसलिए श्रीयंत्र को सृष्टि, स्थिति एवं प्रलय का द्योतक माना गया है। प्रलयकाल में भी श्रीयंत्र की सत्ता बनी रहती है।
8. श्रीयंत्र के माध्यम से कुछ भी प्राप्त किया जा सकता है, कुछ भी निर्मित किया जा सकता है। यहाँ तक कि अवतारों को भी विकसित इसी माध्यम से किया जाता है।
9. शिव ने सर्वप्रथम 64 वाममार्गीय रहस्यों को उजागर किया, परंतु उमा के कहने पर अंत में 65वीं बार श्रीयंत्र का आविष्कार किया और इसके बाद तो वे मौन हो गये। श्री यंत्र शिव की सभी योनियों के लिए अंतिम एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण देन है। इसके माध्यम से उन्होंने अमरता प्रदान कर दी, परकाया प्रवेश की सिद्धि प्रदान कर दी, जीव को मृत्यु के पाश से मुक्त करा दिया, कल्पांत तक जीने की व्यवस्था कर दी।
10. मंदिर निर्माण से पहले सर्वप्रथम श्री यंत्र स्थापित किया जाता है। फिर देव प्रतिमा की स्थापना की जाती है और मूर्ति के ठीक ऊपर महामृत्युंजय यंत्र स्थापित किया जाता है। श्रीयंत्र अनेकों यंत्रों को शक्ति प्रदान करता है।
11. श्रीयंत्र मूलाधार की शक्ति है और इसी के द्वारा मूर्ति चैतन्य होती है एवं ऊपर लगा महामृत्युंजय यंत्र भी श्रीयंत्र के द्वारा ही देव प्रतिमा को आयु प्रदान करता है। यह समस्त अभिचार कर्म, कीलनों एवं आक्रमणों से देव प्रतिमा की रक्षा करता है।
12. धर्म परम रस है। इसके पान से ही जीव को संपूर्णता प्रदान होती है और श्रीयंत्र का मुख्य उद्देश्य धर्म का उत्सर्जन करना है।

13. श्रीयंत्र दृष्टिकोण को विराटता प्रदान करता है। श्री यंत्र वह साधना है, जिसमें कि बल की एक इकाई करोड़ गुना ज्यादा परिणाम प्रदान करती है। जब तक श्री सिद्धि नहीं होगी, सम्मोहन कदापि नहीं आएगा।
14. मन में विचार आते हैं, किसी योजना को संपन्न करने के लिए परंतु जीवन भर नहीं कर पाते, बस केवल सोचते रह जाते हैं। ऐसी स्थिति में त्रिपुर सुंदरी का तांत्रोक्त अनुष्ठान करना पड़ेगा। पूजा करने का मन होता है, गुरू के पास जाने की इच्छा होती है, परीक्षा एवं व्यापार में मन लगाने की इच्छा भी होती है, परंतु गुरू के पास जा नहीं पाते, पूजा कर नहीं पाते और किसी भी भौतिक उत्थान के कार्य में मन ही नहीं लगता। अर्थात् षोडशी शक्ति का नितांत अभाव है। इन विपरीत परिस्थितियों में माता षोडशी त्रिपुरसुन्दरी की तांत्रोक्त आराधना एवं कवच पाठ श्रीयंत्र के सान्निधय में साधक को क्रियाशीलता की प्रतीक षोडशी शक्ति से संपन्न कर देता है।
15. इस जगत में जो भी दृश्यमान चित्र निर्मित होते हैं, वह सबके सब श्रीयंत्र के अंदर स्थित है। बिंदु, रेखा, त्रिकोण, चतुर्भुज, पंचकोण, षट्कोण इत्यादि के साथ वृत्त, भूपुर, पुष्पदल सभी प्रकार की आकृतियाँ श्रीयंत्र के अंदर कहीं–न–कहीं निर्मित होती हैं। चाहे डमरू हो, त्रिशूल हो, स्वास्तिक हो या कोई और अन्य शुभ चिन्ह वह श्रीयंत्र के अंदर अवश्य दिखलाई पड़ता है। अतः इस देव निर्मित परम ब्रह्माण्डीय यंत्र के द्वारा असंख्य प्रकार के शुभ लाभ लिए जा सकते हैं।
16. युद्ध ब्रह्माण्ड की निरंतरता नहीं है। यह तो तात्कालिक क्रोध का परिणाम है। चाहे राम हों या कृष्ण या फिर कोई अन्य अवतार, एक दिन युद्ध से सभी थक जाते हैं। आदि गुरु शंकराचार्य जी ने समस्त जीवन युद्ध किया। अंत में माँ त्रिपुर सुंदरी की शरण में गये। अपने मठों में श्री साधना प्रारम्भ करवाई एवं श्रीयंत्र का स्थापत्य किया। ❁ ❁ ❁

समस्या समाधान

प्रतिकूलता सृष्टि का विधान है। प्रतिकूलता न हो तो मनुष्य अपनी संपूर्णता की तरफ बढ़ने का प्रयत्न ही न करे। प्रतिकूलता न हो तो एक भी व्यक्ति ईश्वरोपासना के मार्ग पर नहीं चले। समस्या, मुसीबत, दुर्भाग्य, रोग, दरिद्रता, कष्ट इत्यादि प्रतिकूलता के ही अंग–प्रत्यंग हैं। प्रतिकूलता बार–बार जीव को कुछ करने के लिए, कर्म फल प्राप्ति हेतु, सुधार हेतु, ज्ञान हेतु, सम्प्रेषण हेतु और इससे भी बढ़कर गुरु सान्निध्य, ईश्वर सान्निध्य हेतु उत्प्रेरित करती है। एक भी व्यक्ति ऐसा ढूंढकर ले आओ, जो समस्याओं से ग्रसित न हो? मैं उसे और तुम्हें दोनों को माल्यार्पण कर निश्चित ही परम वंदन कर उठूंगा। आध्यात्म का प्रत्येक अंग चाहे वह मंत्रोपासना हो, योग, ध्यान, सिद्धि, यंत्र, तंत्र, दीक्षा इत्यादि हों इन सबका समग्रता के साथ समस्या समाधान हेतु उपयोग किया जाता है। यज्ञानुष्ठान, हवन सभी निश्चित ही जनकल्याण के लिए अति श्रेष्ठ एवं उत्तम मार्ग हैं। भौतिक, अधिभौतिक, दैविक, दैहिक एवं आध्यात्मिक प्रतिकूलताओं के लिए आप हमारे माध्यम से कुछ राय, कुछ सहयोग, कुछ दिशा–निर्देश एवं मार्ग प्राप्त कर सकते हैं, वह भी बिना किसी बाध्यता के। किसी भी सूरत में आपकी स्वतंत्रता खण्डित नहीं होगी, यह मेरा वायदा है। आप पत्र भी लिख सकते हैं। पत्र के साथ टिकट लगा जवाबी लिफाफा अवश्य होना चाहिए। पत्रों की अधिकता के कारण कभी–कभी समय लग जाता है। फिर भी एक महीने के भीतर जो भी पत्र प्राप्त होता है, उसका उत्तर अवश्य दिया जाता है।

हमारा पता

श्री श्री अभिषेक कुमार

(समस्या समाधान)

शक्ति अनुसंधान केन्द्र

मो0–हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी, पटना–8.

श्री यंत्र पर कुछ विशिष्ट, अद्भुत, दुर्लभ प्रयोग

1. **असाध्य उदर रोग पर स्फटिक श्रीयंत्र का प्रयोग** :– चाँदी की थाली में पानी भरकर उसमें स्फटिक का श्रीयंत्र स्थापित करें। फिर त्राटक करते हुए इस मंत्र का जप करें– **वं सर्व व्याधि विनाशिनी फट् स्वाहा**– पाँच मिनट तक। जप के समय पीले रंग का ध्यान करें। अब इस जल का सेवन करने पर पेट के समस्त रोगों का शमन होता है। यह प्रयोग 15 दिनों तक करें।
2. **वास्तु दोष निवारण व लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग** :– फैक्ट्री या कंपनी में एक ताम्र कुबेर यंत्र पर पारद श्रीयंत्र स्थापित कर कुबेर पूजा धनतेरस वाले दिन संपन्न करें, तो वास्तुदोष शून्य होकर लक्ष्मी आप पर कृपा करेगी। वास्तु दोष के कारण फैक्ट्रीयाँ बंद पड़ जाती हैं एवं कर्ज इत्यादि अधिकतम हो जाते हैं। अतः यह प्रयोग अनिवार्य है।
   पूजा प्रार्थना मंत्र –
   ॐ धनाद्दयक्षाय देवाय नरयानोपवेशिने नमस्ते राजराजय कुबेराय महात्मने।।
   धूप–दीप दिखाकर पुष्प चढ़ावें।
3. **श्रीयंत्र पर कुण्डलिनी जागरण प्रयोग** :– कई जन्मों के पाशविक संस्कारों के कारण कुण्डलिनी शक्ति क्रियान्वित नहीं होती, परंतु कलयुग में आप कूर्मपृष्ठीय श्रीयंत्र पर कुण्डलिनी जागरण साधना संपन्न करें। पहले समर्थ गुरु से प्राण–प्रतिष्ठित पारद या स्फटिक श्रीयंत्र प्राप्त करें। इस यंत्र को पूजा स्थल पर गुलाबी वस्त्र पर स्थापित करें। अब निम्नोक्त मंत्र का पाँच मिनट प्रातः काल त्राटक संपन्न करें। ऐसा नौ दिनों तक करना है। यह क्रिया नौ दिन रात्रि या शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन से शुरू करें। समय सिर्फ प्रातः काल का होना चाहिए।
   मंत्र – **घं सर्वा ह्लादिनी हूं फट् नमः।** – इस साधना में गुलाबी रंग का ही ध्यान करें। शनैः शनैः कुण्डलिनी उत्थान होती अनुभव होगी।
4. **विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए श्रीयंत्र पर प्रयोग** :– प्रायः प्रत्येक विद्यार्थी सफलता के उच्च शिखर को छूना चाहता है। उसके माता–पिता भी यही अपेक्षा रखते हैं। किंतु कतिपय अवरोधों के कारण यदि ऊर्जा स्थिर हो गयी हो और वांछित परिणाम नहीं मिल रहे हों तो निम्न प्रयोग करें –
   चाँदी की थाली में एक स्फटिक का श्रीयंत्र स्थापित करें और **''ह्रीं ॐ नमः शिवाय ह्रीं''** मंत्र का 36 मिनट तक उच्चारण करते हुए श्रीयंत्र पर जलधारा छोड़ें। अब पूर्वाभिमुख हो वही जल जो श्रीयंत्र पर चढ़ाया गया है, ग्रहण कर लें। निश्चय ही स्मरण शक्ति के विकास के साथ–साथ सुप्त चेतना जाग्रत हो जाएगी।
5. **मृत व्यक्ति का स्वप्न आने पर** :– कई लोगों को मृत व्यक्ति स्वप्न में अधिक दिखते हैं। अतः उन्हें एक ताम्र श्रीयंत्र प्राप्त कर सोते समय तकिये के नीचे रखकर सोना चाहिए। प्रयोग अवधि सवा माह तक करें। फिर यंत्र को नदी या तालाब में विसर्जित करें।
6. **बिक्री में आशातीत वृद्धि हेतु** :– एक कूर्मपृष्ठीय श्रीयंत्र रखें और 21 लौंग इस मंत्र से चढ़ावें तो इच्छानुसार बिक्री होती है।
   भंवरवीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहा कर मेरा। उठे जो डण्डी बिके जो माल, भंवरवीर खाली नहीं जाए।

इस प्रयोग को दीपावली पर दुकान में संपन्न करें। एक लौंग पर एक बार मंत्र पढ़े। यंत्र को ताम्र पात्र या चांदी के पात्र में ही रखें।

7. **लंबी यात्रा में भय निवारण हेतु** :– क्या आप निजी वाहन से यात्रा करते हैं और लगता है कि दुर्घटना की संभावना हो सकती है तो अपने कार या वाहन में गुरु से प्राप्त ताम्र पात्र पर अंकित श्रीयंत्र लगायें। दुर्घटना की संभावना दूर हो जाती है एवं वाहन चलाने में आत्मविश्वास बढ़ता है।
8. **किसी अनजान जगह पर विश्राम के समय भय लगना** :– क्या आप यात्रा के समय किसी होटल या किसी अन्य जग पर रुकते हैं, जहाँ आपको नींद में बेचैनी, स्वप्न आते हैं तो आप एक श्रीयंत्र साथ में रखें एवं कहीं भी विश्राम के समय इस यंत्र पर तीन मिनट तक त्राटक कर निश्चिन्त होकर सोएं। श्री आपकी रक्षा करेगी।
9. **वास्तु दोष निवारण प्रयोग** :– मकान या घर बनवाते समय भूमि–चयन अति आवश्यक है। कूर्मपृष्ठीय भूमि पर बना घर सुख–समृद्धि, यश देने वाले होता है। समतल भूमि पर बना घर मध्यम सुख, यश, कीर्ति कारक होता है। वहीं दूसरी ओर धँसी हुई जगह, ऊबड़–खाबड़, नाले वाली जगह, उतार वाली जगह पर बना आपका घर अशांति, दुःख, अकालमृत्यु, तंत्रबाधा, लक्ष्मी का उच्चाटन आदि घटनाओं को आमंत्रण देता है। परंतु यदि परिस्थितिवश ऐसी जगह आपका घर बन ही गया है तो चिंता छोड़ यह वास्तुदोष प्रयोग करें।

   घर के ईशान कोण में पारद या स्फटिक का श्रीयंत्र स्थापित कर दें। क्योंकि श्रीयंत्र ही वास्तु का रहस्य है। श्रेष्ठता का निर्माण ही श्रीयंत्र है। घर में नकारात्मक शक्तियों का नाश ही श्री विद्या का उद्देश्य है। अतः आपके घर व दुकान में श्रीयंत्र होना ही चाहिए।
10. **उच्च कोटि के संतान की निर्विघ्न प्राप्ति हेतु** :– स्फटिक श्रीयंत्र को ताम्र पात्र के अंदर स्थापित कर दें एवं 11 बार **ॐ श्रीं श्रियै नमः** मंत्र का जप करते हुए पात्र को गंगा जल से भर दें। प्रातः काल गर्भिणी स्त्री पूर्व की तरफ मुख करके इस जल को पी ले। इससे न तो गर्भपात होगा, न ही शल्य चिकित्सा की जरूरत पड़ेगी और पैदा होने वाला शिशु पूर्ण रूप से विकसित होगा। किसी भी प्रकार की मानसिक एवं शारीरिक विकलांगता उसमें नहीं होगी। अगर दम्पत्ति चाहते हैं कि होने वाला बच्चा प्रखर मानसिक शक्तियों से सम्पुट हो तो उन्हें प्रतिदिन गर्भावस्था के दौरान राजराजेश्वरी खड्गमाला स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। यह प्रयोग कम–से–कम आठ माह तक करना चाहिए।
11. **दृष्टिदोष निवारण हेतु** :– कुछ लोगों में रंगों को न पहचानने का दृष्टिदोष होता है एवं कभी–कभी वे रात्रि में देखने में अक्षम होते हैं। हर प्रकार के दृष्टि दोष के निवारण हेतु रंगीन श्रीयंत्र कागज के ऊपर निर्मित कर लें या बाजार से ले आयें एवं प्रतिदिन इस पर दो मिनट अवश्य दृष्टि डालें। आपको चौंका देने वाले परिणाम मिलेंगे।
12. **द्वंद्व की स्थिति से निवारण हेतु** :– व्यक्ति द्वंद्व की स्थिति से ग्रसित होता है। उसके सामने निर्णय न ले पाने की स्थिति निर्मित होती है। ऐसी स्थिति में उसे श्रीयंत्र सामने रखकर **ॐ ह्रीं आधार रूपिणि त्रिपुर सुन्दरी स्वाहा** मंत्र का रूद्राक्ष माला से 108 बार जप कर लेना चाहिए। तदुपरांत लिया गया निर्णय भविष्य में अत्यंत ही उपयोगी एवं सही साबित होता है।
13. **प्रथम अवसर पर श्रेष्ठतम प्राप्ति** :– एक बार में सही पति मिले, एक बार में सही व्यवसाय मिले, प्रथम बार में ही उच्चकोटि की संतान उत्पन्न हो, प्रथम बार में ही लक्ष्य

सिद्ध हो, प्रथम बार में ही उपयुक्त गुरु मिले यही है जन्मजात श्री सिद्धि। बार–बार भटकाव न हो, बार–बार विवाह न करना पड़े, बार–बार परीक्षाओं में न बैठना पड़े, जो कुछ प्राप्ति हो पहली बार में सर्वश्रेष्ठ प्राप्त हो। इस मनः स्थिति की प्राप्ति हेतु आप जीवन के प्रत्येक कार्य करने से पहले श्रीयंत्र के ऊपर प्रतिदिन इस मंत्र का 21 बार जप करें।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

14. **श्रीकल्प प्रयोग** :– यह अत्यंत ही गोपनीय प्रयोग है। सर्वप्रथम कूर्म के ऊपर निर्मित शुद्ध पारद श्रीयंत्र पूजा घर में स्थापित करें एवं प्रतिदिन भोजन करने से पूर्व, जलपान करने से पूर्व श्रीयंत्र के सामने एक चांदी के प्लेट में भोजन, जल इत्यादि रखकर श्रीयंत्र को अर्पित करें एवं 21 बार **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं कमलवासिन्यै स्वाहा** मंत्र का जप करें। तत्पश्चात् ही भोजन ग्रहण करें। सारे जीवन आप निरोगी, यौवनवान एवं आकर्षक बने रहेंगे। श्रीयंत्र को अर्पित किया गया भोजन गाय को खिला देना चाहिए।
15. **अनियमित मासिक धर्म निवारण प्रयोग** :– शनिवार की संध्या को अष्टगंध की स्याही बना लें एवं भोजपत्र के ऊपर अनार की कलम से ऊपर वर्णित यंत्र को दक्षिण की तरफ मुख करके निर्मित करें। यंत्र निर्मित करते समय **ॐ ह्रीं कामाक्ष्यै नमः** का 108 बार मानसिक रूप से जप करें। तत्पश्चात् इस यंत्र को चांदी की ताबीज में रखकर कमर में धारण करें। ऋतुकाल में इस मंत्र का मानसिक रूप से जप करते रहने से अनियमितता, कष्ट इत्यादि में चमत्कारिक लाभ मिलता है।
16. **गुमशुदा व्यक्ति की वापसी हेतु तांत्रिक प्रयोग** :– गुमशुदा व्यक्ति के घर के बाहर से थोड़ी–सी मिट्टी उठाकर उसे कपिला गाय के गोबर में मिलाकर घर एक कोने को लीप दें। लीपे हुए स्थान पर ऊपर वर्णित यंत्र को कोयले से बनाना चाहिए एवं यंत्र के नीचे गुमशुदा व्यक्ति का नाम भी लिखना चाहिए। यह कार्य मंगलवार के दिन करें। उस स्थान पर बैठकर **ॐ ह्रीं मम सर्वार्थ साधिनी स्वाहा** का 2100 बार रूद्राक्ष माला से जप करें। 21 दिन के भीतर गुमे हुए व्यक्ति का पता चल जाता है।
17. **तंत्र बाधा निवारण प्रयोग** :– क्या आप अपने ऊपर से तंत्र बाधा हटाना चाहते हैं, आपका सिर भारीपन लिए हुए है, आँखें भारी–भारी लग रही हैं, कमर और जांघों में दर्द है किसी भी काम में मन नहीं लग रहा हो तो एक मिट्टी के दिए में तेल भर लें। अब इस तेल वाले दिये में नौ मिनट तक अपना चेहरा देखें और यह तेल हनुमान मंदिर में जलते हुए किसी भी दिये में डाल दें। यह प्रयोग शनिवार को करें। इस उपाय से आपको अच्छा अनुभव होगा।
18. **अनुकूल परिणाम हेतु प्रयोग** :– अत्यधिक मेहनत करने पर भी परीक्षा के परिणाम अनुकूल न आना एवं परीक्षा स्थल पर अध्ययन की गयी सामग्री को भूल जाना जैसी स्थिति से बचने के लिए गुरुवार के दिन सुलेमानी हकीक चांदी में जड़वाकर दायें हाथ की तर्जनी में पहनने या लॉकेट बनवाकर गले में धारण करने से अनुकूल परिणाम आते हैं। सुलेमानी पत्थर धारण करते समय 108 बार गुरु मंत्र का जप कर लेना चाहिए।
19. **शांतिपूर्वक नींद आने का प्रयोग** :– रत्रि में शांतिपूर्वक नींद न आने की स्थिति में अपने सामने तांबे के पात्र में शुद्ध जल भर लें। तत्पश्चात् दुर्गा सप्तशती में वर्णित रात्रि सूक्तम् का एक बार पाठ करके पात्र में रखा हुआ जल पी लें। सिर में ब्राह्मी तेल और पैरों में कैस्ट्रोल तेल लगाने से शांति के साथ रात्रि कटती है। व्यक्ति को अकारण ही नींद की गोलियों का सेवन या मादक पदार्थ नहीं लेना पड़ता है।

20. **आरोग्य प्राप्ति हेतु** :– आरोग्य प्राप्ति हेतु लाल रंग के मूंगे से निर्मित श्रीयंत्र स्थापित करना चाहिए। यह यंत्र 70 ग्राम से अधिक का ही होना चाहिए एवं इस श्रीयंत्र को मंगलवार के दिन चांदी के तश्तरी में कुछ जल भरकर स्थापित करें। श्रीयंत्र के दोनों ओर ऊँची सूंड़ वाले मूंगे के हाथी भी स्थापित करें। प्रतिदिन एक चांदी के कलश में कच्चे दूध में शहद, इत्र, लाल पुष्प, चंदन एवं गंगा या नर्मदा जल मिलाकर त्रिपुरसुन्दरी खड्गमाला मंत्र को पढ़ते हुए अभिषेक संपन्न करें। इस प्रयोग को संपन्न करने से श्रीयंत्र के अंदर स्थापित सर्वरोग हरचक्र जागृत हो साधक को सभी प्रकार के रोगों से मुक्त कर देता है।
21. **मानसिक रोग निवारण हेतु** :– पन्ने के उपरत्न से निर्मित सुमेरु श्रीयंत्र को स्थापित करने से साधक को नाना प्रकार के मानसिक रोगों, अज्ञात भय, मृत्यु भय, दुःस्वप्न इत्यादि से छुटकारा मिलता है। पन्ने के उपरत्न से निर्मित श्रीयंत्र 101 ग्राम से अधिक का होना चहिए। इस यंत्र को भी चांदी की तश्तरी में स्थापित करना चाहिए एवं यंत्र के ऊपर प्रतिदिन निम्नलिखित मंत्र पढ़ते हुए **ऐं ह्रीं श्रीं सर्व व्याधि विनाशिनी नमस्ते नमस्ते स्वाहा।** कच्चे दूध से अभिषेक करने पर समस्त मानसिक उपद्रव शांत हो जाते हैं। प्रतिदिन 108 बार इस मंत्र का जप करना चाहिए। इस प्रकार तीन माह तक इस साधना को संपन्न करने से मानसिक उपद्रव से छुटकारा मिलता है।
22. **यश प्राप्ति के लिए** :– सन सितारा नामक एक पत्थर होता है। लगभग 101 ग्राम के आसपास मेरुपृष्ठ श्रीयंत्र को इस पत्थर पर निर्मित करवा लेना चाहिए एवं इसके पश्चात् इस यंत्र को चांदी की तश्तरी में शुक्रवार के दिन स्थापित करना चाहिए और फिर सुगंधित तेल, श्वेत चंदन, इत्र, गुलाब के पुष्प की पंखुड़ियों को शुद्ध जल में मिश्रित कर निम्न मंत्र पढ़ते हुए **ऐं ह्रीं श्रीं सर्व सौभाग्य दायक चक्रस्वामिनी नमस्ते नमस्ते स्वाहा**– से अभिषेक करने पर सर्व सौभाग्यदायक चक्र जागृत हो उठता है और साधक को 6 माह के भीतर ही कहीं न कहीं से यश की प्राप्ति होती है। राजनेताओं, अभिनय क्षेत्र में काम करने वालों, पत्रकारों, लेखकों इत्यादि के लिए इस प्रकार का श्रीयंत्र अत्यंत लाभदायक होता है।
23. **रसायन सिद्धि के लिए** :– मुख्य रूप से भगवती महात्रिपुर सुंदरी साधक को उच्चतम अवस्था में रस सिद्धि प्रदान करती है। रस ही सबसे ज्यादा स्वरूप परिवर्तन करने में सक्षम होता है। रसायन सिद्धि प्राप्त साधक मुख्य रूप से पारद का उपयोग कर नाना प्रकार की औषधि एवं विभिन्न धातुओं के मूल में परिवर्तन कर एक नई धातु प्राप्त कर सकता है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से रसायन सिद्धि अत्यंत महत्वपूर्ण है। श्रीयंत्र के द्वितीय आवरण में चौथे स्थान पर रसाकर्षिणी के रूप में माँ त्रिपुर सुंदरी क्रियाशील होती हैं। रस सिद्धि प्राप्ति हेतु सर्वप्रथम तांत्रोक्त श्रीयंत्र पारद निर्मित स्थापित करना चाहिए। कच्छप का मुख शिवलिंग की तरफ होना चाहिए। इसे शुक्रवार या पूर्णिमा के दिन स्थापित करें। श्रीयंत्र का वृह्द आवरण पूजन को एक बार अवश्य संपन्न कर लें। फिर निम्न मंत्र **ऐं ह्रीं श्रीं रसाकर्षिणी नित्याकला नमः** का सवा लाख बार जप करें। सवा लाख मंत्र जप के पश्चात् दशांश हवन इस मंत्र में स्वाहा लगाकर करें। हवन सामान्य हवन सामग्री से ही करें। शरीर के आंतरिक रसों पर नियंत्रण होते ही साधक पुनः युवावस्था अपने अंदर उत्पन्न करने में सक्षम हो जाता है। जप स्फटिक माला से करना चाहिए।
24. **तांत्रोक्त श्रीयंत्र** :– तांत्रोक्त श्रीयंत्र शुद्ध पारद से निर्मित होता है, जिसके कारण यह अत्यंत ही नाजुक होता है। तांत्रोक्त श्रीयंत्र गिने–चुने साधकों को ही दिया जाता है। आध्यात्म के क्षेत्र में कभी धन, अन्न या किसी और भौतिक सामग्री की कमी न पड़े इस

हेतु तांत्रोक्त श्रीयंत्र प्रदान किया जाता है। तांत्रोक्त श्रीयंत्र के साथ एक नियम और आवश्यक है कि इसे स्वर्ण ग्रास देना महीने में एक बार अत्यंत आवश्यक है। साधक किसी भी वस्तु के लिए अपने उदर पोषण के लिए कुत्ते, बिल्ली के समान किसी पर आश्रित न रहे एवं उसे आवश्यकतानुसार उपभोग की वस्तु स्वतः ही प्राप्त होती रहे, यही तांत्रोक्त श्रीयंत्र की विशेषता है। यह केवल साधकों को ही दिया जाता है, गृहस्थों को इसे कदापि नहीं देना चाहिए। क्योंकि वे लालची होते हैं एवं इसका दुरुपयोग कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में यह स्वतः ही खण्डित हो जाएगा। जिसने तांत्रोक्त श्रीयंत्र स्थापित कर लिया, तीन पीढ़ी तक उसके यहाँ ऋद्धि–सिद्धि नृत्य करेगी। तांत्रोक्त श्रीयंत्र को स्थापित कर **ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं सकल ह्रीं** – मंत्र का जप साधक को नित्य अपनी शक्ति अनुसार करना चाहिए और जो चाहे वह प्राप्त कर लेना चाहिए।

25. **स्फटिक श्रीयंत्र** :– गृहस्थों के लिए श्रेष्ठतम श्रीयंत्र स्फटिक निर्मित होता है। स्फटिक निर्मित मेरुपृष्ठ श्रीयंत्र गृहस्थों के लिए सर्वश्रेष्ठ है। इस श्रीयंत्र को शुक्रवार के दिन चांदी की प्लेट में स्थापित करें और **ऐं ह्रीं श्रीं श्री ललितायै नमः** मंत्र का 108 बार जप करते हुए इस यंत्र पर शुद्ध जल से अभिषेक करें। उसके घर में आरोग्य, उन्नति, समृद्धि, शांति इत्यादि सकारात्मक स्थितियाँ 21 दिनों के भीतर निर्मित हो जायेंगी। परंतु श्रीयंत्र का अभिषेक प्रतिदिन करना आवश्यक है। स्फटिक श्रीयंत्र का अभिषेक करने के पश्चात् उसके जल का सेवन भी कर सकते हैं। इससे वे दुःस्वप्न, मानसिक रोग, चिड़चिड़ाहट इत्यादि से सदैव मुक्त रहेंगे।

–: संक्षेप में :–

श्रीयंत्र विलक्षण है। अचानक रंग परिवर्तन, श्रीयंत्र में से शंखनाद, अष्टगंध की खुशबू, श्रीयंत्र पर अर्पित पुष्पों का लंबे समय तक खिले रहना, श्रीयंत्र में से दैवीय शक्ति प्रवाह सामान्य बातें हैं। साधकों को इससे विचलित नहीं होना चाहिए। जब श्रीयंत्र में अचानक सुनहरी आभा निकलने लगे तो इसे अत्यंत ही शुभ मानना चाहिए। कुछ महीने के पूर्ण श्रद्धा एवं समर्पण से उपासना करने पर श्रीयंत्र परम चैतन्य हो जाता है और जो कुछ उसके सामने बोलो वह सीधे ब्रह्माण्ड के सबसे उच्चतम बिंदु तक पहुँचकर साधक की अभिलाषा को पूर्ण कर देता है। श्रीयंत्र विचित्र है, विहंगम है। अमेरिका से लेकर जर्मनी तक बहुत–से वैज्ञानिक श्रीयंत्र का कोड खोलने में लगे हुए हैं। जिससे कि वह सब कुछ हस्तगत किया जा सके, जो कि एक साधारण मनुष्य को पराब्रह्माण्डीय मनुष्य में परिवर्तित करता है।

प्रस्तुतिः– श्री श्री अभिषेक कुमार (महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं मंत्र, तंत्र, यंत्र विशेषज्ञ)

श्रीयंत्र के बारे में विशेष जानकारी एवं प्राण–प्रतिष्ठित श्रीयंत्र प्राप्त करने हेतु आप एक बार अवश्य मिलें:– **श्री अभिषेक कुमार**
(श्रीविद्या के महा-आचार्य, महाविद्याओं के सिद्ध साधक, मंत्र, तंत्र, यंत्र विशेषज्ञ, शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता, ज्योतिषाचार्य, हस्तरेखाशास्त्री एवं वास्तुशास्त्री, इस्लामी यंत्रों के विशेष जानकार)
शक्ति अनुसंधान केन्द्र, मो०– हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी, पटना–8.
अगर आप तुरंत प्रत्यक्ष मिल सकने में असमर्थ हैं, तो फोन द्वारा भी अपनी समस्याओं का समाधान करा सकते हैं, अथवा हमें ईमेल भी कर सकते हैं।
Mob:- 9852208378, 9525719407 E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com

शुभ दीपावली ।। श्री गणेशाय नमः।। शुभ दीपावली

ॐ वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः। निर्विघ्नं कुरू मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

।। ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः।।

ॐ महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि। हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे।।

दीपावली एवं अन्य शुभ अवसरों पर जपने योग्य माता महालक्ष्मी के कुछ प्रमुख दिव्य मंत्र

1. **ॐ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा।।** (कमलवासिनी लक्ष्मी मंत्र)
2. **ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।** (देवी लक्ष्मी का मूल मंत्र)
3. **श्रीं** (एकाक्षर लक्ष्मी बीज मंत्र)
4. **ॐ श्रीं श्रीं श्रीं ॐ।।** (महालक्ष्मी मंत्र)
5. **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं।।** (स्फटिक माला में लक्ष्मी चैतन्य मंत्र)
6. **ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे, सर्वशक्त्यै च धीमहि। तन्नो देवि प्रचोदयात्।।** (सर्वशक्ति स्वरुपिणी माता महालक्ष्मी का गायत्री मंत्र)
7. **ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे, विष्णुपत्नयै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्।।** (विष्णुपत्नी लक्ष्मी का गायत्री मंत्र)
8. **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्री सिद्ध लक्ष्म्यै नमः।।** (सिद्ध लक्ष्मी मंत्र)
9. **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ज्येष्ठा लक्ष्म्यै स्वयंभुवे ह्रीं ज्येष्ठायै नमः।।** (ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र)
10. **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।।** (लक्ष्मी आवाहन मंत्र)
11. **ॐ श्रीं श्रीं महालक्ष्मी आगच्छ आगच्छ धनं देहि देहि ॐ।।** (लक्ष्मी आवाहन मंत्र)
12. **ॐ श्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद मम गृहे आगच्छ आगच्छ महालक्ष्म्यै नमः।।** (लक्ष्मी आवाहन मंत्र)
13. **ॐ नमो भगवती पद्म पद्मावती ॐ ह्रीं पूर्वाय, दक्षिणाय, पश्चिमाय, उत्तराय आणुपूरय सर्व जनं वश्यं कुरू कुरू स्वाहा।**
(लक्ष्मी वशीकरण देवी पद्मावती मंत्र)
14. **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रियै नमो भगवति मम् समृद्धौ ज्वल ज्वल मां सर्व सम्पदं देहि देहि मम अलक्ष्मी नाशय नाशय हुं फट् स्वाहा।।** (लक्ष्मी तांत्रिक मंत्र)
15. **ॐ श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐश्वर्य महालक्ष्म्यै पूर्ण सिद्धिं देहि देहि नमः।।** (ऐश्वर्य लक्ष्मी मंत्र)
16. **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन पालिन्यै महालक्ष्म्यै अस्माकं दारिद्रयं नाशय नाशय प्रचुरं धनं देहि देहि क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ।।**
(दारिद्रय नाशक प्रचुर धन प्रदाता लक्ष्मी मंत्र)
17. **ॐ ऐं श्रीं महालक्ष्म्यै कमल धारिण्यै गरूड़ वाहिन्यै श्रीं ऐं नमः।।** (व्यापार लक्ष्मी मंत्र)
18. **ॐ श्रीं श्रीं राजलक्ष्म्यै ह्रीं ह्रीं ॐ स्वाहा।।** (राजलक्ष्मी मंत्र)
19. **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै ऋण मुक्तं कुरू कुरू स्वाहा।।** (ऋण मुक्ति लक्ष्मी मंत्र)
20. **ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं क्लीं श्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं लक्ष्मी मम व्यापार वृद्धि कुरू कुरू स्वाहा।।** (व्यापार वृद्धि लक्ष्मी मंत्र)
21. **ॐ श्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यै सिंहवाहिन्यै स्वाहा।।** (सिंहवाहिनी लक्ष्मी मंत्र, धन की पूर्ण सुरक्षा के लिए)
22. **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्प्रसूत्यै नमः।।** (कमला देवी मंत्र)
23. **ॐ ह्रीं अष्टलक्ष्म्यै दारिद्रय विनाशिनी सर्व सुख समृद्धिं देहि देहि ह्रीं ॐ नमः।।** (अष्टलक्ष्मी मंत्र)
24. **श्रीं ह्रीं क्लीं श्री महालक्ष्म्यै स्वाहा।।** (ब्रह्माण्डीय लक्ष्मी मंत्र)
25. **ॐ श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं कमल निवासिनी सदा सुहासिनी मां चंचले महालक्ष्म्यै स्थिरां स्थिरां ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं ॐ नमः विष्णु प्रियाय ॐ नमः शिव प्रियाय ॐ नमः कामाक्षायै ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं श्रीं श्रीं श्रीं ॐ फट् स्वाहा।** (लक्ष्मी स्थिरीकरण मंत्र)
26. **क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं।।** (श्री यंत्र का मूल मंत्र, माता षोडशी, त्रिपुरसुंदरी का मंत्र)
27. **ॐ वं श्रीं वं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्री कनकधारायै नमः।।** (कनकधारा मंत्र)
28. **ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमः।।** (कुबेर मंत्र)
29. **ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवनाय धनधान्याधिपतये धनधान्य समृद्धि मे देहि दापय स्वाहा।।** (कुबेर मंत्र)
30. **ॐ ग्लौं श्रीं अन्नं मह्यन्नं मे देह्यन्नधिपतये ममान्नं प्रदापय स्वाहा श्रीं ग्लौं ॐ।।** (वसुधा लक्ष्मी मंत्र)

राशि के अनुसार लक्ष्मी मंत्र	
मेष – ॐ ऐं क्लीं सौः	कर्क – ॐ ऐं ऐं क्लीं श्रीं
वृष – ॐ ऐं क्लीं श्रीं	सिंह – ॐ ह्रीं श्रीं सौः
मिथुन – ॐ क्लीं ऐं सौः	कन्या – ॐ श्रीं ऐं सौः
तुला – ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं	मकर – ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं सौः
वृश्चिक – ॐ ऐं क्लीं सौः	कुम्भ – ॐ ह्रीं ऐं क्लीं श्रीं
धनु – ॐ ह्रीं क्लीं सौः	मीन – ॐ ह्रीं क्लीं सौः

नवग्रहों का लक्ष्मी मंत्र

सूर्य लक्ष्मी मंत्र – ॐ ऐं ह्रीं सूर्याय नमः
चंद्र लक्ष्मी मंत्र – ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः
मंगल लक्ष्मी मंत्र – ॐ हुं श्री मंगलाय नमः
बुध लक्ष्मी मंत्र – ॐ ऐं श्रीं बुधाय नमः
बृहस्पति लक्ष्मी मंत्र – ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः
शुक्र लक्ष्मी मंत्र – ॐ श्री शुक्राय नमः
शनि लक्ष्मी मंत्र – ॐ ऐं श्री शनैश्चराय नमः
राहु लक्ष्मी मंत्र – ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः
केतु लक्ष्मी मंत्र –ॐ ऐं ह्रीं केतवे नमः

।। ॐ श्री बालात्रिपुरसुन्दर्यै नमः ।।

विभिन्न देवताओं एवं ऋषि–महर्षियों द्वारा उपासित माता त्रिपुरसुन्दरी (श्रीविद्या) के कुछ विशेष मंत्र

1. इन्द्र द्वारा उपासित श्री विद्या का मंत्र – क **ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं**
2. भगवान सूर्य द्वारा उपासित श्री विद्या का मंत्र – **क ए ई ल ह्रीं स ह क ल ह्रीं स ह क स क ल ह्रीं**
3. दुर्वासा मुनि द्वारा उपासित श्री विद्या का मंत्र – **क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं**
4. नंदी द्वारा उपासित श्री विद्या का मंत्र – **स ए ई ल ह्रीं स ह क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं**
5. चंद्रमा द्वारा उपासित श्रीविद्या का मंत्र – **स ह क ए ल ई ल ह्रीं स ह क ह ई ल ह्रीं स ह क ए ई ल ह्रीं**
6. वरुण द्वारा उपासित श्रीविद्या का मंत्र – **क ए ई ल ह्रीं ह क ह ल ह्रीं स ह क ल ह्रीं**
7. वायु देव द्वारा उपासित श्रीविद्या का मंत्र – **क ए र ल र ह्रीं ह क ल र ह ल ह्रीं स र क ल र ह्रीं**
8. कुबेर द्वारा उपासित श्रीविद्या का मंत्र – **ह स क ए ई ल ह्रीं ह स क ए ई ल ह्रीं ह स क ए ई ल ह्रीं**
9. ईशान द्वारा उपासित श्रीविद्या का मंत्र – **क ह ल ह्रीं ह क ल ह ल ल र ह्रीं स क ल ह्रीं**
10. ब्रह्मा जी द्वारा उपासित श्रीविद्या का मंत्र – **क ए ई ल ह्रीं ह क ह स र ह्रीं ह स क ल ह्रीं**
11. भगवान नारायणद्वारा उपासित श्रीविद्या का मंत्र – **क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं स क ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं क ए ई ल ह्रीं**
12. भगवान विष्णु द्वारा उपासित श्रीविद्या का मंत्र – **क ए ई ल ह्रीं ह स क ल ह्रीं स ह स क ल ह्रीं स ए ई ल ह्रीं स ह क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं**
13. नागराज वासुकी द्वारा उपासित श्रीविद्या का मंत्र – **ह स क ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल र ल ह्रीं**
14. मनु द्वारा उपासित श्रीविद्या का मंत्र – **क ह ए ई ल ह्रीं ह क ए ई ल ह्रीं स क ए ई ल ह्रीं**
15. बुध द्वारा उपासित श्रीविद्या का मंत्र – क **ए ई र ल ह्रीं ह क ह ल र ह्रीं स ल क ल र ह्रीं**
16. धर्मराज द्वारा उपासित श्रीविद्या का मंत्र – **क ए क ल ह्रीं ह क ह न ल ह्रीं स ह क ल ह्रीं**
17. भगवान शंकर द्वारा उपासित श्रीविद्या का मंत्र – **क ए ई ल ह्रीं ह स क ल ह्रीं स ह स क ल ह्रीं क ए ई ल ह स क ह ल स क स क ल ह्रीं**
18. देवगुरु बृहस्पति द्वारा उपासित श्रीविद्या का मंत्र – **ह स क ल ह्रीं ह क ह स र ह स क ल ह्रीं**
19. अग्नि देव द्वारा उपासित श्रीविद्या का मंत्र – **क स क ल ह्रीं ह स ल क ल ह्रीं स क ल र ल ह्रीं**
20. सृष्टि क्रमानुसार उपासित श्रीविद्या का मंत्र – **ह स क ल ह्रीं ह ल क ह स ह्रीं स क ल ह्रीं**
21. स्थिति क्रमानुसार उपासित श्रीविद्या का मंत्र – **ह ल क स ह्रीं क स ह ल स ह्रीं क ह स ल ह्रीं**
22. संहार क्रमानुसार उपासित श्रीविद्या का मंत्र – **ह ल क स ह्रीं ह स क ल ह्रीं ह ह क ल ह्रीं**
23. मधुमति तत्व युक्त श्रीविद्या का मंत्र – **क ह ल स ह्रीं क ह य ल ह्रीं क स स ल ह्रीं**

प्रेम विवाह और ज्योतिष

चूँकि आद्याशक्ति माता महात्रिपुर सुन्दरी ने सभी देवताओं को उनकी शक्तियाँ उनकी अर्द्धांगिनी के रूप में समर्पित की है। अतः इस महात्रिपुर माहात्म्य आख्यान में प्रेम विवाह पर कुछ चर्चा करना ज्योतिषिय दृष्टिकोण से आवश्यक समझता हूँ। माता त्रिपुर सुन्दरी ने ब्रह्मा को सरस्वती, विष्णु को लक्ष्मी, शिव को गौरी–पार्वती, इन्द्र को इन्द्राणी, अग्नि को स्वाहा, सविता देव को सावित्री, पितरों को स्वधा, कृष्ण को राधा समर्पित की है। प्रेम विवाह इस युग का एक सत्य है। इससे इंकार नहीं किया जा सकता है।

विवाह इस पृथ्वी का सबसे पुरातन अनुष्ठान है, जो कि प्रत्येक समाज एवं धर्म में चित्र–विचित्र रूपों में दिखाई पड़ता है। यह प्राचीनतम अनुष्ठान है, अतः इसमें अनकों प्रकार की स्थितियाँ निर्मित होती रहती हैं। इस अनुष्ठान एवं परम्परा का प्रभाव व्यक्ति एवं परिवार के ऊपर अत्यंत ही दूरगामी अनुकूल एवं प्रतिकूल पड़ सकता है। विवाह के पश्चात् क्या होगा? कहीं विवाह प्रतिकूलता तो नहीं निर्मित कर देगा। इसके लिए लक्षण शास्त्र, सामुद्रिक ज्ञान एवं ज्योतिष शास्त्र में अत्यंत ही विराटता एवं सूक्ष्मता के साथ लिखा गया है। ज्योतिष शास्त्र एक मानदण्ड प्रदान करता है, जिसे ध्यान में रखकर मर्मज्ञ ज्योतिषी समय, काल एवं परिस्थिति अनुसार सटीक गणना एवं परिणाम प्रदान करने में सक्षम होता है। परिणाम आध्यात्मिक दृष्टिकोण से सिर्फ इसलिए उपयोगी हैं कि उचित विधान एवं तंत्र साधना के द्वारा प्रतिकूलता को अनुकूलत में परिवर्तित किया जा सके।

विवाह जीवन का एक आवश्यक अंग है। विवाह या तो अपने परिजनों द्वारा तय किया जाता है या स्त्री–पुरुष द्वारा स्वयं अपनी रुचि के अनुसार अपना जीवन साथी चुन लिया जाता है। चाहे उन्हें ऐसा करने में चुनौतियों का ही सामना क्यों न करना पड़े, वे अपने निर्णय पर अटल रहते हैं। लेकिन यह सब क्यों होता है? जानिए जन्म कुण्डली में इसका लेखा–जोखा फलादेश–

जन्मकुण्डली में लग्न से सातवाँ स्थान जीवन साथी का होता है। उस स्थान में स्थित राशि तथा ग्रह के अनुसार ही उसे जीवन साथी की प्राप्ति होती है।

लग्न से पाँचवा स्थान प्रेम या मित्रता का है। जब जन्मांग चक्र में पाँचवे तथा सातवें स्थान के स्वामियों का संबंध हो जाता है, अथवा दोनों आपस में केन्द्रवर्ती हो जाते हैं तो व्यक्ति प्रेम विवाह करता है और कोई भी शक्ति उसे प्रेम विवाह करने से रोक नहीं पाती है। यदि इन दोनों स्थानों का संबंध जन्मांग चक्र में शुभ स्थानों में होता है, तो प्रेम विवाह का विरोध नहीं होता। वह समाज में मान्यता प्राप्त कर लेता है। इसके विपरीत जब यही संबंध दुष्ट स्थानों में होता है, तब व्यक्ति अपना घर–परिवार छोड़कर अपने प्रेमी के साथ चला जाता है और प्रेम विवाह कर लेता है। अगर जन्म कुण्डली में पत्नी स्थान सातवें का स्वामी चंद्रमा पंचम प्रेम स्थान में बैठा है तथा पंचमेश शुक्र से प्रबल केन्द्र में हो रहा है तो इस कारण लड़का स्वजातीय लड़की से प्रेम करेगा तथा इस प्रेम संबंध को परिवार भी मान्यत दे देगा।

अगर जन्म कुण्डली में पंचमेश बृहस्पति सप्तम स्थान में बैठा है तथा सप्तमेश शनि से पूर्ण दृष्टि संबंध रहा है जिसके कारण लड़की का अपने से अधिक आयु के विवाहित व्यक्ति से संबंध होगा। किंतु शनि, मंगल, मंगली योगप्रद हो रहे हैं इस कारण प्रेम संबंध विवाह में परिणत नहीं हो पाएगा। लड़की जीवन भर अविवाहित रहेगी।

अगर जन्मकुण्डली में पंचमेश बृहस्पति का सप्तमेश शनि से पूर्ण दृष्टि संबंध होने से प्रेम विवाह होता है। शनि के कारण विजातीय पति की प्राप्ति होती है। राहु की महादशा में बृहस्पति के अंतर में पति के परिजनों के विरोध करने पर भी विवाह संपन्न होता है।

शनि प्रधान व्यक्ति – शनि प्रधान व्यक्ति विद्वान, मधुरभाषी, कुशाग्र बुद्धिवाले, परोपकारी, सहनशील और परिस्थिति के अनुरूप होते हैं। अंतर्मुखी होने के कारण लोग ऐसे व्यक्तियों को समझ नहीं पाते।

ऐसे व्यक्ति सत्तालोलुप, एकांतप्रिय, मनमौजी और चिंतनशील होते हैं। इनमें सूक्ष्म अवलोकन शक्ति होती है। इन्हें भाई और मित्र का सुख कम मिलता है। कंजूस, आलसी, झगड़ालू होने के कारण परिवार से

अनबन रहती है। ऐसे व्यक्तियों को काला रंग धारण करना चाहिए। शनि प्रधान व्यक्ति लोहा, ठेका, लॉटरी, स्टील, मजदूरी प्रधान कार्य, मशीनरी आदि का कार्य करते हैं।

गुरु प्रधान व्यक्ति – ऐसे व्यक्ति चतुर शांति प्रिय, मिलनसार और विशाल हृदय वाले होते हैं। ये बोलने में दूसरों से अलग दिखाई देते हैं। उपदेश देना, लेखनकार्य, धार्मिक कार्य, समाज सेवा, अर्थशास्त्र गुरु का प्रधान कार्य माना जाता है।

मंगल प्रधान व्यक्ति – ऐसे व्यक्ति स्वतंत्र विचारवाले, मेहनती, बुद्धिमान और साहसी होते हैं। ये अनुशासन पसंद, निडर, स्पष्टवक्ता, प्रभावशाली योजनाओं के शिल्पी होते हैं। ऐसे व्यक्तियों में जल्दबाजी, हठी और अपनी बात के लिए अंतिम समय तक लड़ते हैं।

–: निवेदन :–

आदरणीय धर्म प्रेमी मातृ चरण कमल अनुरागी भक्तजनों,

श्रीयंत्र की महिमा एवं माता महात्रिपुर सुन्दरी के लीला वर्णन का हमारा यह प्रयास आपको कैसा लगा, कृपा कर बताईएगा जरूर। इस संपूर्ण पुस्तक में आपको क्या अच्छा लगा, क्या कमी रह गयी, इसके बारे में हमें अवश्य अवगत कराने का कष्ट करें। अगर आपको यह संक्षिप्त पुस्तक अच्छी लगी तो कृपा कर किसी एक धर्म प्रेमी को हमसे लेकर देने का कष्ट करेंगे और संकल्प लेंगे कि आने वाले समय में सम्पूर्ण ऋद्धि–सिद्धि एवं अखण्ड लक्ष्मी की प्राप्ति हेतु अपने घर–दुकान या कार्यालय में स्फटिक के श्रीयंत्र की स्थापना अवश्य करेंगे।

आने वाले समय में एक विशाल शिविर लगा कर अधिक–से–अधिक व्यक्तियों को एक साथ श्रीयंत्र का महापूजन करवाने एवं उन्हें श्रीयंत्र प्रदान करने का विचार है। जो भी व्यक्ति इस तरह के आयोजन में भाग लेने के इच्छुक हों, वे हमसे संपर्क कर सकते हैं। जो अपने घरों में श्रीयंत्र की मेरे द्वारा स्थापना चाहते हों, वे भी संपर्क कर सकते हैं।

दूसरी एक महत्वपूर्ण बात यह है कि अगर आपका किसी ढोंगी–पाखण्डी बाबाओं, साधु–संतों से चक्कर पड़ा हो, तो अपना संपूर्ण दास्तान कम्प्यूटर से टाईप करा कर हमें प्रेषित करें। आने वाले समय में हम उनका प्रकाशन करेंगे। बात केवल निर्मल बाबा, आसाराम बापू या बाबा रामपाल जैसों की नहीं है। ये लोग तो इंटरनेशनल स्तर पर कुख्यात हो चुके हैं। आपके–हमारे आस–पास भी ऐसे ढोंगियों की कमी नहीं है। थोड़े–बहुत फुटपाथी चमत्कार दिखाकर, आध्यात्म के नाम पर भोली–भाली जनता को लूटने वालों की भीड़ लगी है। कभी स्वयं अपने धर्मग्रंथो का अध्ययन नहीं किया, किंतु बड़े उपदेशक एवं प्रवचनकर्त्ता बने बैठे हैं। कभी स्वयं अपने देवताओं का पूजन नहीं किया, किंतु जनता से स्वयं को पूजवा रहे हैं। हमारे देवी–देवताओं एवं परम्पराओं का विरोध कर, शिव की मूर्ति, श्रीयंत्र इत्यादि को घर से हटवा कर अपना तस्वीर अंधभक्तों से लगवाये हुए हैं। कभी संस्कृत का एक शब्द भी ठीक से उच्चारण नहीं किया, किंतु भक्तों के घर यज्ञ–हवन करवा रहे हैं। अपने विषय–वासनाओं पर अंकुश लगाया नहीं, लेकिन दूसरों को त्याग की शिक्षा देते हैं। अब समय आ गया है, ऐसे सभी भक्तों का पैसा ठगने वाले, उन्हें बरगलाने वाले, बड़े–बड़े आश्रमधारियों का पर्दाफाश कोई मीडिया वाले नहीं, बल्कि सामान्य जनता करे। गाँव–देहातों में भूत–प्रेत सिद्ध करने वाले ओझा–गुणियों की भरमार है। कभी अपने अभिमान एवं दुर्गुणों की बली नहीं चढ़ायी, किंतु बकरे–भैंसे अवश्य काटते हैं और इसी को आध्यात्म कहते हैं। शराब में डुबे रहने वाले खुद पर देवी दुर्गा, काली एवं शीतला माता आने का दावा करते हैं। तंत्र–मंत्र के नाम पर बच्चों की बली ले लेते हैं। आध्यात्म के नाम पर हाहाकार मचा हुआ है। ऐसे सभी लोगों से बचने की जरूरत है। इनकी सिद्धियों को शून्य करने की आवश्यकता है। अतः यह श्रीविद्या का महासाधक अभिषेक इस महत् कार्य के लिए आप सबका आवाहन करता है। अपने अनुभव हमें लिख भेजें। हम आपके नाम से प्रकाशित करेंगे। साथ में अपना नाम, पूरा पता एवं अपनी तस्वीर भी भेजें। आने वाले समय में जगह–जगह महाविद्या साधना शिविर लगा कर लोगों को वास्तविक आध्यात्म की जानकारी एवं सिद्धियाँ प्रदान की जायेंगी तथा इन तुच्छ सिद्धिधारी बाबाओं की समस्त सिद्धियों को शून्य करने का प्रयास सिद्धाश्रम के साधकों के प्रयास से किया जाएगा – धन्यवाद.

विवाह बाधा और ज्योतिष

(वैवाहिक विलम्ब एवं ग्रहयोग : ज्योतिषीय विश्लेषण)

विवाह एक संश्लिष्ट और बहुआयामी संस्कार है। इसके संबंध में किसी प्रकार की फलप्राप्ति के लिए विस्तृत एवं धैर्यपूर्ण अध्ययन–मनन–चिंतन की अनिवार्यता होती है। किसी जातक के जन्मांग से विवाह संबंधी ज्ञान प्राप्ति के लिए द्वितीय, पंचम, सप्तम एवं द्वादश भावों का विश्लेषण करना चाहिए। द्वितीय भाव परिवार का द्योतक है तथा पति–पत्नी परिवार की मूल इकाई है। सातवें भाव से अष्टमस्थ होने के कारण विवाह के प्रारंभ एवं अंत का ज्ञान देकर यह भाव अपनी स्थिति महत्वपूर्ण बनाता है। प्रायः पापाक्रांत द्वितीय भाव विवाह से वंचित ही रखता है। संतान सुख वैवाहिक जीवन का प्रसाद पक्ष है, जिसके लिए पंचम भाव का समुचित विश्लेषण आवश्यक है। सप्तम भाव से तो मुख्यतः विवाह से संबंधित अनेक तथ्यों का उद्‌घाटन होता ही है। द्वादश भाव शैया सुख के लिए विचारणीय है। अनेक ज्योतिषी एकादश भाव का विवेचन भी आवश्यक समझते हैं। एक विख्यात सूत्र है कि यदि एकादश भाव में दो ग्रह संस्थित हों तो जातक के दो विवाह होते हैं। स्त्रियों के संदर्भ में सौभाग्य ज्ञान प्रदाता अष्टम भाव का भी अध्ययन करना चाहिए।

फलदीपिका में मंत्रेश्वर ने शुक्र और बृहस्पति को क्रमशः पुरुष व स्त्री का विवाह कारक ग्रह बतलाया है। जबकि प्रश्नमार्ग के मतानुसार स्त्रियों के विवाह का कारक ग्रह शनि है। बृहस्पति और शनि पर विचार करने के साथ–साथ शुक्र पर भी अवश्य विचार करना चाहिए, अन्यथा निर्णय में अशुद्धि होगी।

सप्तमाधिपति की स्थिति भी विवाह के विषय में पर्याप्त बोध कराती है। यदि सप्तमाधिपति अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो उच्च कुल की श्रेष्ठ कन्या के साथ विवाह संपन्न होता है। यदि निम्न राशि में स्थित हो तो सामान्य परिवार से परिणय सूत्र जुड़ता है। इसके केंद्र में श्रेष्ठ स्थिति होने पर वैवाहिक संस्कार अत्यंत वैभवशाली ढंग से संपन्न होता है। सप्तमाधिपति यदि षष्ठ, अष्टम या द्वादश भाव में स्थित हो तो विवाह प्रायः दुःखपूर्ण होता है।

वैवाहिक विलम्ब के संदर्भ में शनि की स्थिति :–

शनि सर्वाधिक मंद गति से भ्रमण करने वाला ग्रह है। द्वादश राशियों में भ्रमण करने के निमित्त उसे 30 वर्ष अपेक्षित होते हैं। अतः विवाह के विलम्ब से होने में शनि की सर्वाधिक महत्पूर्ण भूमिका है।

किसी भी जन्मकुण्डली में विवाह–काल का निर्णय करते समय सर्वप्रथम विचारणीय यह है कि कन्या का विवाह उचित आयु में होगा या विलम्ब से होगा या नहीं होगा। प्रायः कन्या के विवाह में विलम्ब होने की स्थिति में ही अभिभावक चिंताग्रस्त हो जाते हैं। जब विलम्ब अधिक होने लगता है तो स्वयं जातिका की व्यग्रता भी बढ़ जाती है।

विवाह की समुचित अवस्था विशेषतया कन्या के लिए 18–25 वर्ष तक है। परंतु 22वें वर्ष के समाप्त होने के साथ–साथ कन्या के अविवाहित रहने की स्थिति में अभिभावकों को कुछ विलम्ब का अनुभव होने लगता है। 25वें वर्ष में अभिभावकों के संग–संग कन्या स्वयं भी विवाह की ओर से अनिश्चितता की स्थिति में आ जाती है। विवाह में विलम्ब होगा अथवा विवाह होगा ही नहीं, इसके ज्ञान के लिए ज्योतिष से अधिक कोई अन्य विज्ञान उपयोगी सिद्ध नहीं हुआ है। सर्वप्रथम निम्नलिखित प्रश्नों पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। विवाह में अवरोध का क्या कारण है? कौन–कौन से ग्रह बाधक हैं? किस–किस ग्रहयोग के कारण अनेक गंभीर प्रयत्न भी लगातार विफल होते जा रहे हैं।

जब किसी कन्या की जन्मकुण्डली में शनि, चंद्रमा अथवा सूर्य से युक्त या दृष्ट होकर सप्तम भाव अथवा लग्न में क्रमशः संस्थित हो तो विवाह नहीं होता। नवमांश चक्र भी अवश्य देखना चाहिए।

शनि सप्तम भाव में भले ही स्वगृही हो, परंतु सूर्य से सप्तमस्थ होने पर विवाह में अवश्य बाधा आएगी। शनि एवं सूर्य संयुक्त रूप से लग्न में हों तब भी बाधा आएगी। शनि लग्न में और चंद्रमा सप्तम हो तो

विवाह में पर्याप्त विलम्ब होगा। शनि और चंद्रमा संयुक्त रूप से सप्तमस्थ हों अथवा नवांश लग्न से सप्तमस्थ हों तो विवाह में विलम्ब होता है। यदि शनि और चंद्रमा लग्न और सप्तम भाव के स्वामी होकर एक–दूसरे को देख रहे हों तो विवाह में विलम्ब होता है। यह स्थिति कर्क व मकर लग्न वालों के लिए ही संभव है। लग्न में शनि स्थित हो, सूर्य सप्तम भावस्थ हो एवं सप्माधिपति निर्बल हो तो विवाह नहीं होता। शनि यदि सूर्य अथवा चंद्रमा में से एक को देखता हो अथवा उससे युक्त हो तथा शुक्र भी शनि के द्वारा प्रभावित हो (शनि की राशि या नक्षत्र में हो अथवा शनि से दृष्ट हो) तो विवाह में विलम्ब होता है। लग्न सप्तम, उनके अधिपति अथवा शुक्र यदि पापकर्तरि योग स्थापित कर रहे हों तो विवाह में विलम्ब होता है। विशेष रूप से यदि सूर्य, लग्न, लग्नेश, सप्तम भाव, सप्तमेश अथवा शुक्र से द्वितीयस्थ हो व शनि द्वादशस्थ हो अर्थात् लग्न अथवा सप्तम भाव या उनके अधिपति शनि और सूर्य से घिरे हुए हों तथा शनि सूर्य पर दृष्टि निक्षेप कर रहा हो तो विवाह में अप्रत्याशित विलम्ब होता है। यदि कुछ अन्य दोष भी हों तो विवाह नहीं होता।

शनि और सूर्य के कुछ विशिष्ट योग, जिनकी जन्मांग में संस्थिति जातक के परिणय की संभावना को क्षीण अथवा विनष्ट करती है।

शनि और सूर्य यदि संयुक्त सप्तम भावस्थ हों तो विवाह नहीं होता।

यदि लग्न से द्वादशस्थ शनि हो और द्वितीयस्थ सूर्य हो तथा लग्नेश निर्बल हो तो विवाह नहीं होता।

यदि सप्तम भाव शनि और सूर्य से संपुटित हो अर्थात् शनि षष्ठभावस्थ हो एवं सप्तमेश बलहीन हो तो विवाह नहीं होता अथवा यदि शनि लग्नस्थ हो और सूर्य सप्तमभावस्थ हो तथा कोई अन्य योग सप्तमभाव में न हो तो विवाह नहीं होता।

यदि शनि सप्तम भावस्थ हो और सूर्य लग्नस्थ हो तो विवाह नहीं होता।

यदि सप्तमेश या शुक्र से द्वितीयस्थ सूर्य हो एवं द्वादशस्थ शनि हो तो भी विवाह नहीं होता।

यदि शनि और सूर्य ऐसा पारम्परिक दृष्टिसंबंध रखते हों कि लग्न या सप्तम भाव प्रभावित हो रहा हो तो विवाह होने की संभावना बहुत–कम होती है।

यदि सूर्य सप्तमभावस्थ हो और शनि की उस पर दृष्टि हो अर्थात् शनि लग्नस्थ, पंचमस्थ या दशमस्थ हो तो विवाह होने की संभावना क्षीण हो जाती है।

यदि सूर्य और शनि के साथ शुक्र और सप्तमेश हों तो भी विवाह की संभावना नहीं होती।

उल्लेखनीय तथ्य है कि शनि और सूर्य की युति उतनी अशुभ नहीं है जितनी कि सूर्य पर शनि की दृष्टि या सूर्य पर शनि की परस्पर दृष्टि। उपरोक्त स्थितियों में शनि और सूर्य के अंशों में 60 अंश या 180 अंश का अंतर विवाह प्रतिबंधक योग की स्थापना करता है।

:: शिव द्रोह ::

शिव द्रोही मम दास कहावा, ते नर सपनेहु सुख नहीं पावा

शिव प्रसादेन बिना न बुद्धिः, शिव प्रसादेन बिना न युक्तिः।
शिव प्रसादेन बिना न सिद्धिः, शिव प्रसादेन बिना न मुक्तिः।।

जो व्यक्ति देवाधिदेव भगवान शिव से विरोध करके अन्य देवताओं से सिद्धियों की इच्छा रखता है, वह नितांत मूर्ख है। ऐसा व्यक्ति कभी सपने में भी सुख नहीं पाता। क्योंकि शिव से ही इस ब्रह्माण्ड की स्थिति है। बिना शिवलिंग स्थापना के किसी भी शक्ति साधना में सफलता नहीं मिलती।

–: सूचना :–

श्रीयंत्र पर माता ललिताम्बा महात्रिपुर सुन्दरी के संपूर्ण षोडशोपचार एवं तांत्रोक्त पूजन हेतु मैंने अलग से एक पुस्तिका लिखी है। जिस किसी भी धर्म प्रेमी जिज्ञासुओं को चाहिए, वे मुझसे संपर्क कर सकते हैं। श्रीयंत्र द्वारा संपूर्ण लाभ प्राप्त करने हेतु एवं सिद्धियों की प्राप्ति इस पुस्तिका में वर्णित पूजन पद्धति से साल में कम–से–कम एक या दो बार भी पूजन अवश्य करना चाहिए। अगर प्रत्येक माह कर सकें तो अति उत्तम। इसमें वर्णित पूजन पद्धति को संक्षेप कर नित्य पूजन में भी सम्मिलत कर सकते हैं।

।। ॐ श्री बालात्रिपुरसुन्दय नमः।।

।। श्री ललिता अष्टोत्तरशत नामावली।।

(माता महात्रिपुरसुन्दरी के दिव्य 108 नाम)

1. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रजताचलशृङ्गाग्रमध्यस्थायै नमो नमः।
2. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हिमाचलमहावंशपावनायै नमो नमः।
3. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शंकरार्धाङ्गसौन्दर्यशरीरायै नमो नमः।
4. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लसन्मरकतस्वच्छविग्रहायै नमो नमः।
5. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महातिशयसौन्दर्यलावण्यायै नमो नमः।
6. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शशाङ्कशेखरप्राणवल्लभायै नमो नमः।
7. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सदापञ्चदशात्मैक्यस्वरूपायै नमो नमः।
8. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भस्मरेखाङ्कितलसनमस्तकायै नमो नमः।
9. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विकचाम्भोरुहदललोचनायै नमो नमः।
10. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शरच्चाम्पेयपुष्पाभनासिकायै नमो नमः।
11. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लसत्काञ्चनताटङ्ककयुगलायै नमो नमः।
12. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मणिदर्पणसङ्काशकपोलायै नमो नमः।
13. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ताम्बूलपूरितस्मेरवदनायै नमो नमः।
14. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुपक्वदाडिमीबीजरदनायै नमो नमः।
15. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कम्बुपूगसमच्छायकन्धरायै नमो नमः।
16. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्थूलमुक्ताफलोदारसुहारायै नमो नमः।
17. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गिरीशबद्धमाङ्गल्यमङ्गलायै नमो नमः।
18. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पद्मपाशाङ्कुशलसत्कराब्जायै नमो नमः।
19. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पद्मकैरवमन्दारसुमालिन्यै नमो नमः।
20. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुवर्णकुम्भयुग्माभसुकुचायै नमो नमः।
21. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रमणीयचतुर्बाहुसंयुक्तायै नमो नमः।
22. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कनकाङ्गदकेयूरभूषितायै नमो नमः।
23. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बृहत्सौवर्णसौन्दर्यवसनायै नमो नमः।
24. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बृहन्नितम्बविलसज्जघनायै नमो नमः।
25. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौभाग्यजातश्रृंगारमध्यमायै नमो नमः।
26. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दिव्यभूषणसन्दोहरञ्जितायै नमो नमः।
27. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पारिजातगुणाधिक्यपदाब्जायै नमो नमः।
28. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुपद्मरागसङ्काशचरणायै नमो नमः।
29. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामकोटिमहापद्मपीठस्थायै नमो नमः।
30. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीकण्ठनेत्रकुमुदचन्द्रिकायै नमो नमः।
31. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सचामररामवाणीवीजितायै नमो नमः।
32. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भक्तरक्षणदाक्षिण्यकटाक्षायै नमो नमः।
33. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भूतेशालिङ्गनोद्भूतपुलकाङ्गयै नमो नमः।
34. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अनंगजनकापाङ्गवीक्षनायै नमो नमः।
35. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्रह्मोपेन्द्रशिरोरत्नरञ्जितायै नमो नमः।
36. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शचीमुख्यामरवधूसेवितायै नमो नमः।
37. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लीलाकल्पितब्रह्माण्डमण्डलायै नमो नमः।
38. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अमृतादिमहाशक्तिसंवृतायै नमो नमः।
39. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एकातपत्रसाम्राज्यदायिकायै नमो नमः।
40. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सनकादिसमाराध्यपादुकायै नमो नमः।
41. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं देवर्षिभिस्तूयमानवैभवायै नमो नमः।
42. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कलशोद्भवदुर्वासःपूजितायै नमो नमः।
43. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मत्तेभवक्त्रषड्वक्त्रवत्सलायै नमो नमः।
44. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चक्रराजमहायन्त्रमध्यवर्त्यै नमो नमः।
45. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चिदग्निकुण्डसम्भूतसुदेहायै नमो नमः।
46. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शशाङ्कखण्डसंयुक्त मुकुटायै नमो नमः।
47. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मत्तहंसवधूमन्दगमनायै नमो नमः।
48. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वन्दारुजनसन्दोहवन्दितायै नमो नमः।
49. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अन्तर्मुखजनानन्दफलदायै नमो नमः।
50. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पतिव्रताङ्गनाभीष्टफलदायै नमो नमः।
51. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अव्याजकरुणापूरपूरितायै नमो नमः।
52. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निरंजनचिदानन्दसंयुक्तायै नमो नमः।
53. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सहस्रसूर्यसंयुक्तप्रकाशायै नमो नमः।
54. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रत्नचिन्तामणिगृहमध्यस्थायै नमो नमः।
55. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हानिवृद्धिगुणाधिक्यरहितायै नमो नमः।
56. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महापद्माटवीमध्यनिवासायै नमो नमः।
57. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जाग्रतस्वप्नसुषुप्तीनां साक्षिभूत्यै नमो नमः।
58. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महापापौघपापानां विनाशिन्यै नमो नमः।
59. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दृष्टभीतिमहाभीतिभंजनायै नमो नमः।
60. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं समस्तदेवदनुजप्रेरिकायै नमो नमः।

61. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं समस्तहृदयाम्भोजनिलयायै नमो नमः।
62. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अनाहतमहापद्ममन्दिरायै नमो नमः।
63. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सहस्त्रारसरोजातवासितायै नमो नमः।
64. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पुनरावृतिरहितपुरस्थायै नमो नमः।
65. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वाणीगायत्रीसावित्रीसन्नुतायै नमो नमः।
66. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रमाभूमिसुताराध्यपदाब्जायै नमो नमः।
67. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लोपामुद्रार्चितश्रीमच्चरणायै नमो नमः।
68. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सहस्त्ररतिसौन्दर्यशरीरायै नमो नमः।
69. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भावनामात्रसन्तुष्टहृदयायै नमो नमः।
70. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सत्यसम्पूर्णविज्ञानसिद्धिदायै नमो नमः।
71. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिलोचनकृतोल्लासफलदायै नमो नमः।
72. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसुधाब्धिमणिद्वीपमध्यगायै नमो नमः।
73. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दक्षाध्वरविनिर्भेदसाधनायै नमो नमः।
74. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीनाथसोदरीभूतशोभितायै नमो नमः।
75. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चन्द्रशेखरभक्तार्तिभंजनायै नमो नमः।
76. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वोपाधिविनिर्मुक्तचैतन्यायै नमो नमः।
77. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नामपरायणाभीष्टफलदायै नमो नमः।
78. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सृष्टिस्थितितिरोधानसङ्कल्पायै नमो नमः।
79. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीषोडशक्षरीमन्त्रमध्यगायै नमो नमः।
80. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अनाद्यन्तस्वम्भूतदिव्यमूर्त्यै नमो नमः।
81. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भक्तहंसपरीमुख्यवियोगायै नमो नमः।
82. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मातृमण्डलसंयुक्तललितायै नमो नमः।
83. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भण्डदैत्यमहासत्वनाशनायै नमो नमः।
84. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रूरभण्डशिरच्छेदनिपुणायै नमो नमः।
85. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धाराच्युतसुराधीशसखदायै नमो नमः।
86. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चण्डमुण्डनिशुम्भादिखण्डनायै नमो नमः।
87. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रक्ताक्षरक्तजिह्वादिशिक्षणायै नमो नमः।
88. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महिषासुरदोवीर्यनिग्रहायै नमो नमः।
89. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अभ्रकेशमहोत्साहकारणाय नमो नमः।
90. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महेशयुक्तनटनतत्परायै नमो नमः।
91. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निजभर्तृमुखाम्भोजचिन्तनायै नमो नमः।
92. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वृषभध्वजविज्ञानभावनायै नमो नमः।
93. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जन्ममृत्युजरारोगभंजनायै नमो नमः।
94. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विधेयमुक्तविज्ञानसिद्धिदायै नमो नमः।
95. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामक्रोधादिषड्वर्गनाशनायै नमो नमः।
96. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं राजराजार्चितपदसरोजायै नमो नमः।
97. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्ववेदान्तसंसिद्धसुतत्वायै नमो नमः।
98. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीवीरभक्तविज्ञाननिधानायै नमो नमः।
99. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अशेषदुष्टदनुजसूदनायै नमो नमः।
100. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं साक्षाच्छ्रीदक्षिणामूर्तिमनोज्ञायै नमो नमः।
101. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हयमेधाग्रसम्पूज्यमहिमायै नमो नमः।
102. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दक्षप्रजापतिसुतावेषाढयायै नमो नमः।
103. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सुमबाणेक्षुकोदण्डमण्डितायै नमो नमः।
104. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नित्ययौवनमाङ्गल्यमङ्गलायै नमो नमः।
105. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महादेवसमायुक्तशरीरायै नमो नमः।
106. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महादेवरतौत्सुक्यमहादेव्यै नमो नमः।
107. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वज्रमाणिक्य कटककिरीटायै नमो नमः।
108. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कस्तूरीतिलकोल्लासिनीटलायै नमो नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं ॥
सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं ॥
क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा। ॥

यह मुक्ति का महामंत्र है।
समस्त दुःखों से मुक्ति प्राप्ति हेतु एव विश्व व्यापी आतंकवाद से मुक्ति प्राप्ति हेतु इस मंत्र का अवश्य जप एवं अनुष्ठान करें।

।। ॐ नमश्चण्डिकायै ।।

शक्ति अनुसंधान केन्द्र

मो0 – हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी – 8.

क्या आप निम्नलिखित समस्याओं से परेशान हैं, जिसका उपाय कहीं भी नहीं मिल रहा और यंत्र, मंत्र, पुजा–पाठ करके हार चुके हैं, तो मिलिए – परम पूज्य गुरुदेव श्री अभिषेक जी से

(महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं विश्व के सबसे बड़े तांत्रिक गुरू के शिष्य)

1. क्या आप वर्षों से कोई साधना, पुजा या उपासना कर रहें हैं, लेकिन सफलता नहीं मिल रही है?
2. ईश्वर की किसी विशेष शक्ति का दर्शन करना चाहते हैं, लेकिन सफलता नहीं मिल रही है?
3. आप एक अच्छे ज्योतिषी हैं, लेकिन आपकी भविष्यवाणियॉ प्रायः सत्य नहीं होती?
4. आप एक ब्राह्मण हैं। पुजा–पाठ करवाते हैं, पर उचित दक्षिणा नहीं मिलती?
5. आप एक तांत्रिक–मांत्रिक हैं। यंत्र वगैरह लोगों को देते हैं, पर स्वयं विपत्ति झेल रहे हैं। धन की अशुद्धि हो गई है।
6. आप पर या आपके परिवार के किसी सदस्य पर किसी ने तांत्रिक प्रयोग कर दिया है?
7. आपका पुत्र या पुत्री किसी गलत संगत में पड़ गया है?
8. आपके घर में हमेशा झगड़े का माहौल रहता है। पति–पत्नी में हमेशा खटपट होते रहती है?
9. आपको या आपके बच्चों को पढ़ने में मन नहीं लगता?
10. आपकी पुत्री या बहन विवाह योग्य हो गई है और कोई उचित वर नहीं मिल रहा?
11. यदि कोई उचित वर मिलता है, तो अत्यधिक दान–दहेज की समस्या उत्पन्न हो जाती है?
12. आपकी सहेलियॉ अत्यधिक खुबसूरत हैं, और आप साधारण स्तर की। और आप भी सौंदर्य प्राप्त करना चाहती हैं?
13. आए दिन किसी–न–किसी से झगड़ा होते रहता है?
14. वर्षों से केस–मुकदमा से आपका परिवार पीड़ित है या किसी ने आपको झूठे आरोपों में फंसा दिया दिया है?
15. आप एक अच्छे वकील हैं, पर विरोधी पक्ष से हमेशा दब जाते हैं। आप अपने विरोधी वकील का मुख बांधना चाहते हैं।
16. आप अपने शत्रु के व्यापार को बांधना चाहते हैं?
17. क्या आपको हमेशा मानसिक अशांति घेरे रहती है?
18. आपके दुकान पर पहले बहुत भीड़ रहती थी। पर अचानक बिक्री बंद हो गई है।
19. क्या आप वर्षों से डिग्री लेकर बेरोजगार घुम रहे हैं?
20. आप लिखित परीक्षा निकाल लेते हैं, किंतु इंटरव्यू में हमेशा छंट जाते हैं?
21. क्या आप उच्च स्तरीय परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं?
22. क्या घर का कोई सदस्य वर्षों से अनजानी बिमारी से ग्रस्त है?
23. आप पुजा–पाठ करने बैठते हैं, किंतु थोड़ी ही देर में मन उचट जाता है?
24. क्या आप हमेशा कर्ज में ही डुबे रहते हैं?
25. आप एक ख्याति प्राप्त डॉक्टर हैं। लेकिन दूसरों का इलाज करते–करते स्वयं भयानक बीमारी या विपत्ति से ग्रस्त हो गए हैं?
26. आप महाविद्याओं की साधना करना चाहते हैं, किंतु उचित मार्ग दर्शन नहीं प्राप्त हो रहा?
27. आपके आस–पास कोई दुष्ट तांत्रिक या ओझा–गुणी है, और आप उसकी शक्तियों को समाप्त करना चाहते हैं?
28. आपका घर या मुहल्ला किसी भुत–प्रेत या चुड़ैल के आतंक से ग्रस्त है?
29. आपके घर या फैक्ट्री में आए दिन दुर्घटनायें होते रहती हैं?
30. आपका बहुत बड़ा दुकान है और उसमें आए दिन चोरी की संभावनायें रहती हैं?
31. आप पुलिस या अन्य जोखिम भरे कार्यों में हैं और आए दिन जान को खतरा रहता है?
32. आपकी गाड़ी/वाहन को दुर्घटना को भय रहता है?
33. वर्षों से आप किराए के मकान में रहते हैं, और आपका एक मकान का सपना है?
34. क्या आपके कार्य में आए दिन विध्न आते रहते हैं?
35. आपकी शादी को वर्षों हो गए हैं और अभी तक एक संतान भी नसीब नहीं हुआ?
36. आप पढ़ते हैं, किंतु याद नहीं रहता है, तुरंत भुल जाते हैं?

श्री अभिषेक जी मुक्ति का महामंत्र देते हैं –

शत्रु से मुक्ति, प्रपंचों से मुक्ति, दरिद्रता से मुक्ति, रोग, शोक तथा भय से मुक्ति, अविद्या से मुक्ति, जन्म–मरण चक्र से मुक्ति तथा आवागमन से मुक्ति

मोबाइल पर संपर्क करें :–

यदि आप तुरंत मिलने में असमर्थ हैं तथा आध्यात्म में कोई व्यवधान है, तो आप शनिवार एवं रविवार को दिन में 11–12 बजे के बीच धर्म संबंधित जानकारियॉ, साधना संबंधित प्रश्न, मंत्र जप की विधियॉ, ग्रह बाधा संबंधित प्रश्न, रूद्राक्ष या रत्न के बारे में जानकारी हेतु श्री अभिषेक जी से फोन पर संपर्क कर सकते हैं।

Mob:– 9852208378, 9525719407, E-mail:-shaktianusandhankendra@gmail.com

॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

"शक्ति अनुसंधान केंद्र की विशेषतायें"

(आखिर आप शक्ति अनुसंधान केंद्र में क्यों आयें?)

1. यहाँ मंत्र प्राप्त करने के लिए दवा खाने का झंझट नहीं है। दवा देना डॉक्टरों का काम है, गुरूओं का नही। किसी अन्य आश्रम से जो आप पाँच–छः सौ रूपये का दवा लेते हैं, उतने पैसों में आपको उच्च कोटि की तंत्र सामग्री, यंत्र, रूद्राक्ष वगैरह उपलब्ध करा दी जाती है; ताकि आप साधना जितनी जल्दी हो प्रारंभ कर सकें।
2. यहाँ अग्नि क्रिया जैसी विधि के लिए नौ दिनों का चक्कर लगाने की आवश्यकता नहीं है। अभिषेक जी एक दिन में ही शरीर पर से सारी नकारात्मक शक्तियों को हटाकर देह बांध देते हैं।
3. यहाँ मंत्र प्राप्त करने के लिए पूर्णीमा का इंतजार करने और घंटों लाइन लगाने की आवश्यकता नहीं है। आप जिस दिन मिलने के लिए आते हैं, उसी दिन मंत्र प्राप्त हो जाता है।
4. यहाँ कागज पर मंत्र लिखकर केवल दे नहीं दिया जाता है, बल्कि स्वयं अपने मुख से उच्चारित करते हैं। गुरू के मुख से मंत्र निकलते ही वह कीलन से मुक्त हो जाता है, और शीघ्र सफलतादायी होता है। मंत्र का उतना महत्व नहीं है, जितना गुरूवाणी का। गुरू अगर 'राम' को 'मरा' भी कहकर दे दे, तो वही सिद्धिदायक हो जाता है।
5. यहाँ मिलने के लिए भूखे पेट आने की आवश्यक्ता नहीं है।
6. यहाँ शरीर पर धारण हेतु विशेष रक्षा यंत्र प्राप्त करने के लिए एक माह तक अगली पूर्णिमा का इंतजार करने की आवश्यकता नहीं है और ना ही मंत्र सुनाने की जरूरत। आप प्रत्येक यंत्र के लिए अति मामूली शुल्क देकर तुरंत प्राप्त कर सकते हैं। केवल आपके लिए ही नहीं, बल्कि आपके संपूर्ण परिवार एवं मित्रों के लिए भी रक्षा यंत्र मिल सकता है, और इसके लिए सबको मंत्र लेने की आवश्यक्ता भी नहीं। अभिषेक जी अगर किसी पर प्रसन्न हो जाते हैं, तो मुफ्त में भी प्रदान कर देते हैं।
7. यहाँ केवल किसी एक देवता की साधना नहीं होती। बल्कि आपकी रूची अनुसार देवताओं का पूजन कराया जाता है, या अभिषेक जी के स्वविवेक के अनुसार।
8. यहाँ पुराने शिष्य हो जाने पर दुबारा मिलने हेतु किसी प्रकार की मासिक शुल्क की आवश्यकता नहीं। आप कभी भी अपने आध्यात्मिक प्रश्न के निवारण हेतु मिल सकते हैं।
9. यहाँ जप हेतु माला अभिषेक जी के निर्देशन में शास्त्रोक्त विधि से संस्कारित एवं प्राण–प्रतिष्ठित कर के दिया जाता है।
10. किसी भी महाविद्या साधना में खास कर काली, दुर्गा, तारा इत्यादि में शिवलिंग के बिना सिद्धि प्राप्त नहीं होती। शिवलिंग प्रदान करने की क्षमता सभी गुरूओं में नहीं होती। अभिषेक जी स्वयं अपने हाथों से आपको शिवलिंग प्रदान करते हैं। शिवलिंग को नीलकण्ठास्त्र, पाशुपतास्त्र आदि से प्राण–प्रतिष्ठित किया जाता है।
11. यहाँ एक ही देवता के मंत्रों में अन्य देवताओं के मंत्रों का बेमेल खिचड़ी नहीं बनाया जाता, बल्कि प्रत्येक देवी–देवताओं की स्वतंत्र साधना संपन्न होती है।
12. जब तक व्यक्ति गुरूगृह में पूजन संपन्न न करे, देवता आशीर्वाद नहीं देते। यहाँ अभिषेक जी के साथ पूजन करने के लिए तीन साल लंबे इंतजार की आवश्यक्ता नहीं। अभिषेक जी समय–समय पर विशेष अनुष्ठान संपन्न कराते हैं, जिसमें आप उनके साथ सम्मिलित हो सकते हैं।
13. यहाँ आपको विशेष आध्यात्मिक अस्त्र–शस्त्र (हथियार) चलाने की शक्ति दी जाती है, जो कि पटना के किसी अन्य आश्रम में संभव नहीं।
14. नवरात्र के दिनों में जौ का विशेष महत्व है। अगर आप कलश बैठाना चाहें तो आशीर्वाद स्वरूप जौ प्राप्त कर सकते हैं। जिससे साधना काल में आप पर कोई विध्न नहीं आएगा।
15. नवग्रहों की शांति के लिए आपको मिट्टी लगाने अथवा झंडा गाड़ने की जरूरत नहीं। आप एक विशेष नवग्रह यंत्र प्राप्त कर जिंदगी भर उस पर नवग्रह साधना संपन्न कर सकते हैं।
16. भूत–प्रेत दोष निवारण हेतु यहाँ थुक चटाने या मारने–पीटने जैसी अमानवीय क्रिया नहीं होती।
17. यहाँ केवल उपदेश देकर मन नहीं बहलाया जाता। बल्कि आप की समस्या का वास्तव में समाधान किया जाता है।
18. शक्ति अनुसंधान केंद्र से जुड़ने पर आपको प्रमुख सिद्ध शक्ति पीठों पर ले जाकर साधना संपन्न करायी जाती है, ताकि आप शीघ्र–अतिशीघ्र सिद्धियाँ प्राप्त कर सकें।
19. मंत्र प्राप्त होते ही अभिषेक जी आपको हवन कुण्ड से मंत्र सिद्ध भभूत प्रदान करते हैं, जिसका उपयोग आप किसी के भी भूत–प्रेत को रोकने में या तबीयत ठीक करने में कर सकते हैं।
20. यहाँ हवा से भभूत निकालने या लड्डु निकालने जैसी फुटपाथी चमत्कार का प्रदर्शन नहीं किया जाता, बल्कि आपकी जिंदगी में वास्तविक चमत्कार उत्पन्न किए जाते हैं, जिससे आपके कष्टों का निवारण हो।
21. अन्य जगहों में ज्योतिषीगण या तथाकथित गुरू महाराज यंत्रों की प्राण प्रतिष्ठा स्वयं न कर, अन्य पेशेवर ब्राह्मणों से करवाते हैं, जो कि उनके लिए केवल लेबर की तरह कार्य करते हैं। जिनमें कोई विशेष दैवीय चेतना न के बराबर होती है। जबकि इसके विपरीत यहाँ अभिषेक जी स्वयं सभी यत्रों का निर्माण करते हैं, एवं प्राण प्रतिष्ठा करते हैं। इस कार्य के पीछे इनकी अतुलित गुरू भक्ति एवं साधना की शक्ति कार्य करती है। इसलिए कभी–कभी भक्तों को यंत्र प्रदान करने में थोड़ा विलम्ब भी हो जाता है। क्योंकि विशेष मुहूर्त आने पर ही कुछ विशेष यंत्रों की सिद्धि की जाती है।

श्री मातृ चरण कमल दर्शन

जिसके घर में, जीवन में सभी कुछ अशुभ–ही–अशुभ हो रहा हो, लाभ की जगह हानि–ही–हानि हो रही हो, वह व्यक्ति आँख मूंदकर मुझसे श्रीविद्या की दीक्षा ले कर पारद या स्फटिक के श्रीयंत्र, शिवलिंग एवं गणपति की मूर्ति एक साथ चाँदी की प्लेट में स्थापित करे। सब कुछ शुभ–ही–शुभ होगा। यह वादा करता हूँ।

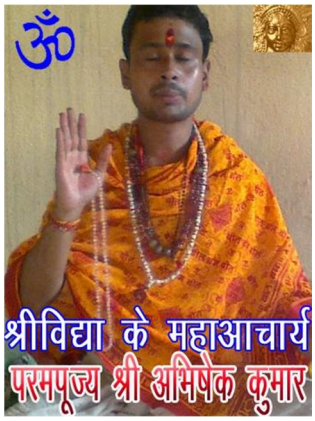

"क्षमा प्रार्थना"

हे आदि शक्ति माता महात्रिपुर सुन्दरी! इस संपूर्ण लेख में तुम्हारे दिव्य महासौन्दर्य एवं दिव्य लीलाओं का वर्णन् करने में अगर इस छोटी बुद्धि वाले 'अभिषेक' से कहीं कोई गलती या त्रुटियाँ हो गयी हों, तो कृपा कर मुझे क्षमा प्रदान करने की कृपा करें। तेरे दिव्य सौन्दर्य का वर्णन् करने में तो ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश समेत समस्त देवता भी समर्थ नहीं हैं, तो भला यह 'अभिषेक' क्या चीज है। दत्तात्रेय, दुर्वासा, वशिष्ठ, देवगुरू बृहस्पति, दैत्यगुरू शुक्राचार्य, देवराज इन्द्र, राम, कृष्ण, महिषासुर, रावण, दैत्यराज बलि तक जब तुम्हारी लीलाओं का वर्णन करने में असमर्थ हैं, तो भला मेरी बुद्धि क्या काम करेगी? बुद्धि के देवता गणेश एवं विद्या की देवी सरस्वती भी तुम्हारी महिमा का संपूर्ण वर्णन जब नहीं कर सकते, तो भला मैं किस प्रकार से कर सकता हूँ? मुझे जो भी समझ में आया माँ, तेरे प्यारे पुत्रों ने तेरे बारे में जो कुछ भी कहा बस उसे पढ़कर मैंने भी लिख दिया। एक बालक को पूर्ण अधिकार है, अपनी माता के महासौन्दर्य के बारे में कुछ कहने का। तेरे दिव्य सौन्दर्य की कुछ झांकी मुझे भी मिली, जिसका मैंने अपनी क्षमतानुसार वर्णन किया है। तुम्हारे इस महागोपनीय सौन्दर्य को जो केवल शिव की ही आँखों का विषय है, संसार के सामने लाने की धृष्टता कर रहा हूँ, क्षमा चाहता हूँ। एक माता को पूर्ण अधिकार है, या तो अपने बच्चे को दुलारे अथवा दुत्कारे। तुम्हारी प्रत्येक लीला में मेरा कल्याण ही होगा, ऐसा मैं जानता हँ। बस अपनी कृपा दृष्टि हम सभी पर बनाये रखना। आपका ही– अभिषेक

–: सूचना :–

शक्ति अनुसंधान केन्द्र द्वारा आने वाले समय में धर्म, ज्योतिष एवं वास्तु संबंधी एक मासिक पत्रिका के प्रकाशन का विचार है। जो भी धर्म प्रेमी बंधु इस महत् आयोजन से जुड़ना चाहते हों, उनका हार्दिक स्वागत है। यह इसी परम्परा की एक कड़ी है, ट्रायल है। आपके द्वारा दी गयी प्रत्येक सुझावों का हम स्वागत करते हैं। आपके द्वारा तन, मन, धन एवं आध्यात्मिक शक्तियों तथा ज्ञान से सहयोग की आवश्यकता है। धन्यवाद

जय माँ काली

!! ॐ नमश्चण्डिकायै !!

जय माँ उग्रतारा

।। ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः।।

।। अहिंसा परमो धर्मः।।

पशुबली महापाप है, इसे रोकें।

आओ हम उस धर्म का पालन करें, जो विश्व के सभी प्राणियों पर दया, प्रेम एवं करुणा की शिक्षा देता है।

क्या तुम्हारा मन, ह्रदय एवं आत्मा अशांत है?

आओ मैं तुम्हें शांति प्रदान करूँगा।

श्री अभिषेक कुमार
श्री विद्या के महाआचार्य, महाविद्याओं के सिद्ध साधक, शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता एवं मंत्र, तंत्र, यंत्र विशेषज्ञ

शक्ति अनुसंधान केन्द्र

(जहाँ एक दिन सब को आना है।)

यहाँ प्रत्येक पूर्णिमा की महारात्रि को शक्ति अनुसंधान होता है।